ज्ञानामृत

नवम्बर, 1981
वर्ष 17 ❋ अंक 5
मूल्य 2.00

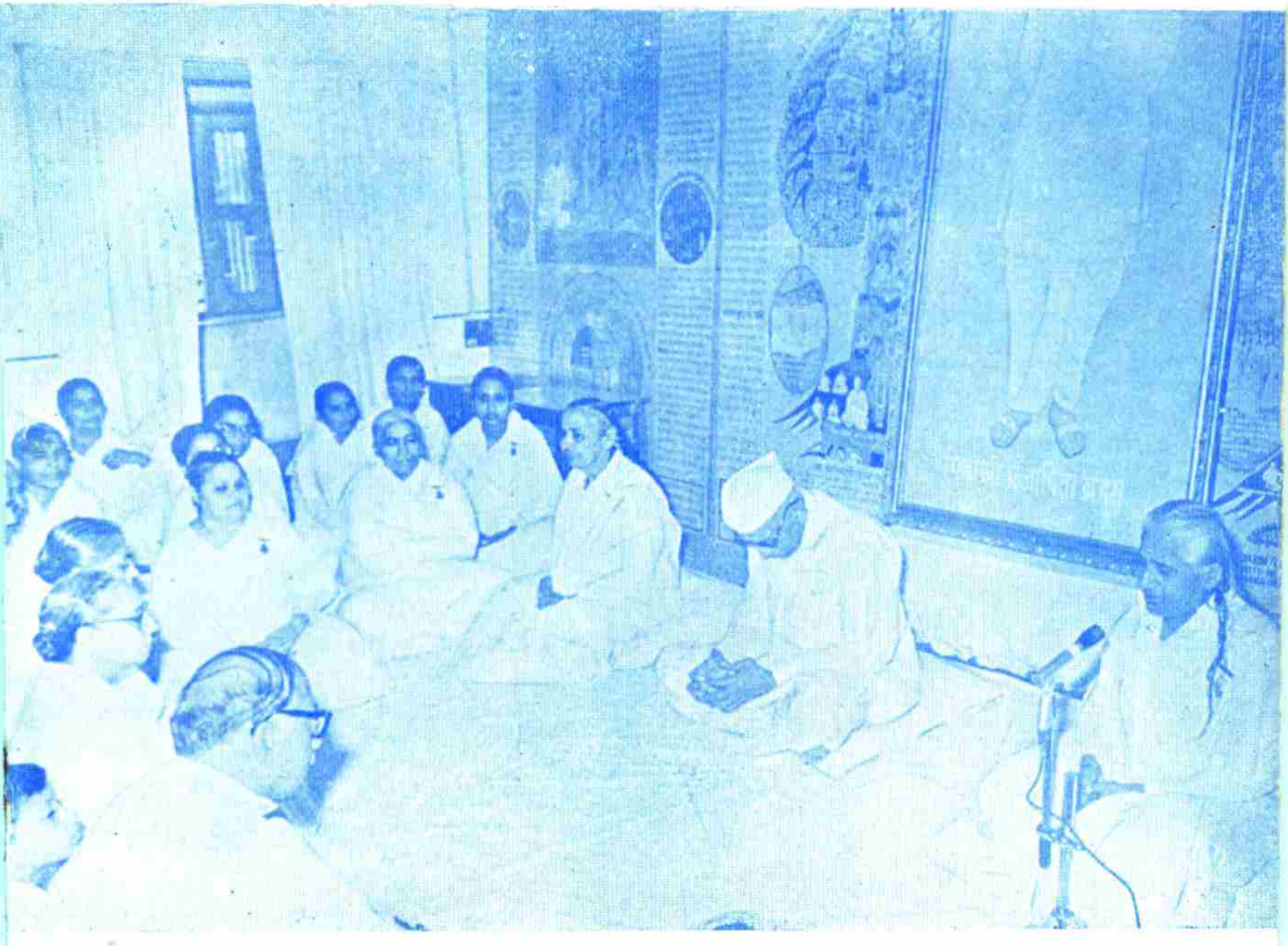

भ्राता मोरार जी देसाई, भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के मुख्यालय, आबू पर्वत पर सभा भवन में, उनकी बायीं ओर दादी प्रकाशमणि जी तथा दायीं ओर बैठी हैं दीदी मनमोहनी जी तथा अन्य भाई बहनें

अम्बाला कैन्ट में "विश्व कल्याण आध्यात्मिक मेले' के उद्घाटन समारोह में बाएं चित्र में भ्राता जी० डी० तापसे, राज्यपाल हरियाणा, ब्र० कु० कृष्णा से, श्री लक्ष्मी श्री नारायण का चित्र भेंट लेते हुए तथा दाएं चित्र में 'प्यूरिटी पत्रिका' का अवलोकन करते हुए। मंच पर भ्राता ब्रिजमोहन जी, अमीर चन्द जी तथा दादी प्रकाशमणि जी विराजमान हैं।

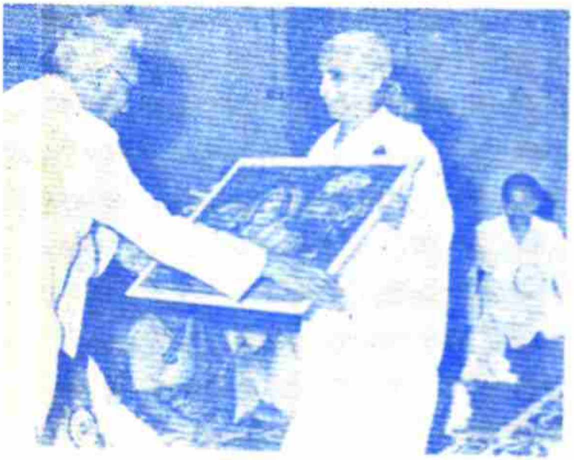

पटना में यादव समति के समारोह में ब्र० कु० निर्मल पुष्पा बिहार के राज्यपाल जी को श्री कृष्ण का चित्र भेंट करते हुए।

बंगलोर में विधायक सदन में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का उद्घाटन करती हुई बहन बसवराजेश्वरी, विधान परिषद की अध्यक्षा, तथा ब्र० कु० हृदय मोहिनी जी। ब्र० कु० हृदय पुष्पा जी, तथा ब्र० कु० मृत्युञ्जय जी साथ में दिखाई दे रहे हैं।

ब्र० कु० मनोहर इन्द्र जी मारीशियस के प्रधान मन्त्री को शिव बाबा का चित्र भेंट कर रही हैं। साथ में ब्र० कु० चन्द्रा हैं

अमृत-सूची

क्रम संख्या	विषय	पृ०	क्रम संख्या	विषय	पृ०
१.	आबू पर्वत पर भ्राता मोरार जी देसाई का आगमन	१	१३.	चिट्ठी मिली	२५
२.	क्या परमात्मा है और उसे देखा जा सकता है ? (सम्पादकीय)	२	१४.	विचार प्रवाह	२६
३.	आत्म विश्वास	५	१५.	संकटों में छिपा आपका उज्जवल भविष्य	२८
४.	विजयी वत्स	८	१६.	नर्क की एडवरटाइज़मेंट	३०
५.	सेवा समाचार (चित्रों में)	१०	१७.	अव्यक्त बाप दादा के अनमोल वचन	३१
६.	आओ बच्चो	१२	१८.	आर्य संस्कृति में शिव	३२
७.	आध्यात्मिकता और राजविद्या	१५	१९.	महाविनाश में छिपी शान्ति	३५
८.	बूझो तो जानें (ज्ञान-पहेलियाँ)	१६	२०.	संजीवनी बूटी	३७
९.	देख कबीरा रोया	१७	२१.	ब्राह्मण जीवन में सम्पूर्ण पवित्रता क्या है ?	३९
१०.	परिवर्तन की आधार शिला	१९	२२.	सेवा समाचार (चित्रों में)	४०
११.	हमारी सेवाएं	२२	२३.	साहित्य समाज का दर्पण है	४१
१२.	विदेश समाचार	२३	२४.	वापिस घर जाना है	४३
			२५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	४५

आबू पर्वत पर भ्राता मोरार जी देसाई का आगमन

भारत सरकार के भूतपूर्व प्रधानमंत्री भ्राता मोरार जी देसाई १० अक्तूबर १९८१ को संस्था के निमंत्रण पर एक माननीय अतिथि के रूप में ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के मुख्यालय, पाँडव भवन में पधारे। उनके साथ गुजरात विद्यापीठ के रजिस्ट्रार भी थे। बाद में संस्था के ऐतिहासिक हाल में उनका सामान्य परन्तु हार्दिक अभिनंदन किया गया जहाँ पर उन्होंने खुशी व्यक्त की कि मुझे यह स्थान देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने याद दिलाया कि जब वे भारत के उपप्रधानमंत्री थे तब उन्होंने संस्था के करोल बाग, नई दिल्ली स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्‌घाटन किया था।

उन्होंने शांति-स्तम्भ को भी देखा तथा परिक्रमा भी की, साथ २ यादगार के चारों ओर खुदे हुए उद्ध-रणों को, जो कि बाबा की वाणियों से लिए गए हैं, बड़े गौर से तथा सम्मान पूर्वक पढ़ा। २२ घंटे के विश्राम के समय में, उनकी पुराने भाई-बहिनों के साथ संक्षिप्त बैठक हुई। ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी ने उनसे संस्था के मत-सम्बन्धी विषय पर वार्तालाप किया। ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा जी ने ब्रह्मा बाबा की अलौकिक जीवन कहानी की झलकियाँ सुनाई। इसके बाद उनको ब्र० कु० रत्न मोहिनी, भ्राता आर०एल० गुप्ता अतिरिक्त सेशन जज, दिल्ली के प्रमुख वकील भ्राता लाल चन्द वत्स से भी मिलवाया गया, जिन्होंने उनको अपने २ व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभवों से अवगत कराया। ब्र० कु० हृदयमोहिनी ने बाबा के बारे में अपने निजी अनुभवों पर प्रकाश डालते हुए दिव्य-दृष्टि के बारे में भी बताया। राजयोग शिविर की शिक्षिका ब्र० कु० शीलू ने उनको क्रियात्मक रूप से योग में बिठाकर आध्यात्मिकता का अनुभव कराया। उन्होंने बाबा का कमरा भी देखा। उनका दोनों प्रमुख बहनों से भी मिलना हुआ। ११ अक्तूबर १९८१ को प्रातःकाल वे मुख्य मेडिटेशन हाल में क्लास में भी उपस्थित हुए और बाबा की मुरली का कुछ भाग सुना तथा ७वजे के 'आध्यात्मिक मौन' में भी शामिल हुए। वे बाबा को भोग लगाने के समय भी बैठे और बाबा के संदेश को भी सुना।

विदाई से पहले वे पत्रकारों से मिले और तब उन्होंने दादी जी और दीदी जी से छुट्टी ली।

क्या परमात्मा है और उसे देखा जा सकता है ?

संसार में आज जितना शोध (Research) या खोज का कार्य हो रहा है, उतना शायद पहले कभी नहीं किया गया। नये-नये विषयों पर शोध करने के कारण ही आज विश्व-विद्यालयों में पाठ्य-क्रम में नये-नये विषय जोड़े जा रहे हैं और हर वर्ष कितने ही लोग 'डाक्टर' अथवा 'पी० एच० डी०' की उपाधि प्राप्त करते हैं। लोग भी नित्य नई बातों में दिलचस्पी लेते हैं। आज वैज्ञानिक यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि आकाश में किसी ग्रह में कोई जीव हैं या नहीं, येती (Yeti) नाम वाला कोई दीर्घ-काय प्राणी पहाड़ों पर है या नहीं, 'ब्लैक होल' (Black Hole) ब्लैक क्यों है और आकाश में स्थित इस अन्धेरे स्थान(Hole)से प्रकाश क्यों नहीं आता, प्रकृति का प्रतिरोधी तत्व (Anti-Matter) क्या है, प्रकाश से भी अधिक तीव्र गति वाले परमाणु-अंशों, जिन्हें टेचियॉन (Tacheyon) कहा जाता है, का सचमुच अस्तित्व है या नहीं, आदि-आदि। इस प्रकार के शोध-कार्य द्वारा प्रकृति के नये-नये रहस्य सामने आये हैं। एक समय था जब गेलिलियो ने दूरबीन बनाकर दूर आकाश में झाँका था। इससे उसे अनेक रहस्य मालूम हुए थे। आज तो इतने विशाल दूरबीन बने हैं कि जो सितारे पहले कभी नहीं देखे गये थे, आज वे भी देखे जा सकते हैं। इसी प्रकार, एक समय था जब अणुवीक्षण यन्त्र (Microscope) नहीं बना था। तब मनुष्य को अत्यन्त छोटे जीवाणुओं का पता ही नहीं था। इस यन्त्र के आविष्कार होते ही मनुष्य को जीव-जगत के अनेक सूक्ष्म रहस्य मालूम हुए। खोज करने की प्रवृत्ति से मनुष्य ने परमाणु को भी परिछन्न करके उसके सूक्ष्म अंश कर डाले हैं, पृथ्वी का भी छेदन करके वह उसके भीतरी तत्त्वों को जानने लगा है, आकाश में भी उसने बृहस्पति तक वैज्ञानिक शोध-यन्त्र भेज दिये हैं और वह ध्वनि, प्रकाश, विद्युत, चुम्बक, गुरुत्वाकर्षण आदि-आदि शक्तियों को पहले से अधिक जानने लगा है। परन्तु खेद का विषय है कि मानव 'मानव' को नहीं जान पाया। उसने अभी स्वयं पर काबू नहीं पाया ! पहले यह कहावत थी कि मनुष्य का मन तो एक अथाह सागर के समान है; 'जैसे सागर के भेद को कोई नहीं पा सका वैसे ही मनुष्य के मन को भी कोई नहीं जान सका', परन्तु आज प्रशान्त महासागर तथा अन्य महा-सागर की थाह तो मनुष्य ने पा ली है और उसके भेद भी प्रायः जान लिये हैं परन्तु वह अपने मन को नहीं जान पाया और ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर, आनन्द के सागर तथा प्रेम के सागर परमात्मा को भी नहीं जान पाया।

इसमें एक सबसे बड़ी उलझन की बात यह है कि जो लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं, उनके भी विचार एक नहीं हैं। उनमें प्रायः लोग यह कहते हैं कि परमात्मा का कोई भी रूप नहीं है और इसलिये उसे देखा ही नहीं जा सकता। अन्य कई कहते हैं कि आत्मा स्वयं ही परमात्मा अथवा ब्रह्म है, इससे भिन्न कुछ है ही नहीं, और जो लोग परमात्मा को आत्मा से अलग मानते हैं, वे परमात्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये यह प्रमाण देते हैं कि उसने ही जगत् या सृष्टि को बनाया और वही हरेक को उसके कर्म का फल देता है तथा वही हरेक के जन्म-मरण को सम्भव बनाता है !

इस प्रकार के सिद्धान्त, जो परमात्मा का प्रत्यक्षी-करण अथवा साक्षात्कार सम्भव नहीं मानते, केवल अनुमान ही पर आधारित रह जाते हैं और जिस प्रकार के अनुमान प्रमाण वे देते हैं, वे भी अकाट्य नहीं होते। इसका परिणाम यह होता है कि बहुत-से

बुद्धिजीवी लोग यदि पक्के नास्तिक न भी बनें तो वे पक्के विश्वासी भी नहीं होते बल्कि विश्वास-अविश्वास की सीमा पर (Agnostics) बने रहते हैं। इससे न केवल उन्हें परमात्मा से परम प्राप्ति नहीं होती बल्कि उनकी देखा देखी अन्य बहुत-से साधारण जन भी ईश्वर-विमुख ही हो जाते हैं। इस सबका परिणाम यह है कि मनुष्य, आत्मा के पिता—परमात्मा—को न मानने के कारण अनाथ, असमर्थ तथा असहाय ही हो गया है।

हम ईश्वर के जगत् के कर्त्तापन की चर्चा कर रहे थे। जो लोग ऐसा मानते हैं, वे कहते हैं कि यह जगत परमात्मा ने बनाया। कुछेक तो कहते हैं कि प्रकृति को भी उसने बनाया; अन्य कहते हैं कि प्रकृति भी परमात्मा और आत्माओं की तरह अनादि है परन्तु परमात्मा ने जगत को वैसे ही बनाया जैसे कि एक कुम्हार अपने चलते चाक पर मटका, घड़ा, सुराही आदि बनाता है। इसलिये वे परमात्मा के अतिरिक्त कुम्हार को भी 'प्रजापति' कहते हैं। अब यदि उनसे यह पूछा जाय कि परमात्मा ने जगत को कैसे बनाया तो इसके उत्तर में वे ऐसी रोचक कथाएँ सुनाते हैं जो कि पुराणों में तथा हर धर्म के किसी-न-किसी ग्रंथ में हैं जिन्हें सुनकर एक बुद्धिजीवी व्यक्ति दांतों-तले अंगुली दबाकर रह जाता है। निराकार होते हुए भी परमात्मा ने साकार जगत को कैसे बनाया और क्यों बनाया—इसका कोई सन्तोषजनक, तर्क-सम्मत एवं युक्ति-युक्त उत्तर न मिलने के कारण वैज्ञानिकों ने जगत की रचना और इसकी प्रक्रिया के लिये खोज करनी प्रारम्भ की और महाविस्फोट (Big Bang) आदि नाम से कई सिद्धान्त गढ़े।

किसी ने कहा कि यह सृष्टि एक घड़ी के समान है; जैसे कोई घड़ी-साज़ घड़ी बनाकर, चाबी लगाकर दे देता है और फिर उससे अलग हो जाता है तथा उसके ख़राब होने पर ही उसे फिर संभालता है, वैसा ही कर्त्तव्य परमात्मा का भी है। इसी घड़ी के दृष्टान्त को लेकर उन्होंने यह सिद्ध करने का यत्न किया कि घड़ीसाज़ द्वारा बनाये जाने के बिना घड़ी स्वतः तो बन नहीं सकती, इसी प्रकार परमात्मा द्वारा बनाये बिना यह सृष्टि भी नहीं बन सकती। दूसरे विचारों के लोगों ने कहा कि घड़ी का दृष्टान्त ठीक नहीं है, परमात्मा तो सारा कल्प ही निर्माण और विनाश की छोटी-बड़ी क्रिया करता ही रहता है, यहाँ तक कि वृक्ष का पत्ता भी उसकी इच्छा के बिना नहीं हिलता। परन्तु घोर तर्कवादी मनुष्यों ने तर्क और विज्ञान के आधार पर दोनों प्रकार के वादियों के सामने प्रश्नों की झड़ी लगा दी जिसका जो उत्तर उन्होंने दिया वह बहुत-से वैज्ञानिकों को नहीं जचा। इस पर ईश्वरवादियों ने कहा कि ईश्वर तो अनुभव का विषय है, यह वाद-विवाद का विषय नहीं है। परन्तु अनुभव भी तर्क-सम्मत या विवेक-युक्त तो होना ही चाहिये तथा उसमें कोई अन्तर्विरोध तो नहीं होना चाहिये।

अब प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की तो बात ही सभी से न्यारी है। यहाँ केवल अनुमान नहीं, अनुभव भी होता है और कितनों को दिव्य प्रत्यक्ष भी। इस ज्ञान का तो स्रोत ही स्वयं परमात्मा है; अतः किसी मनुष्य द्वारा कल्पित एवं रचित वाद पर यहाँ की मान्यताएँ आधारित नहीं हैं। **परन्तु जब इस विवेक-युक्त अनुभूति के लिये इच्छुक व्यक्ति को यह कहा जाता है कि इसके लिये पवित्र बनना तथा योग-युक्त होना ज़रूरी है तो वह विकारों को छोड़ने की बजाय प्रभु के अनुभव करने की इच्छा को छोड़ देता है। कुसंग को छोड़ने की बजाय सत्संग से मुख मोड़ने को तैयार हो जाता है, भगवान को भोग लगाने योग्य भोजन सेवन करने की बजाय यह भोग लगाने की बात को नामंजूर (अस्वीकृत) करता है, सिनेमा-दर्शन को तिलांजलि देने के बजाय प्रभु-दर्शन से हट जाता है। वह और उसकी पत्नी—दोनों—परमात्मा के लिये तो 'वत्स', अथवा 'पुत्र' ही हैं परन्तु वे परमात्मा से भी बेटी और जवाई या बहू और बेटे ही के रूप में मिलना चाहते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय, जो कि उसकी बुद्धि और उसके शुद्ध मनोभाव को सन्तुष्ट करने की चुनौति स्वीकार करता है, उसे वह बुद्धि और मन को प्रभु से जुटाने ही नहीं देता।**

कोई तो कहता है कि हम बुढ़ापे में यह ज्ञान लेंगे, मानो कि उसे यह पक्का मालूम है कि वह बूढ़ा होगा, और अन्य कोई कहता है कि हम तो अब बूढ़े हो गये हैं, अब हम क्या परिवर्तित होंगे ! अन्य कोई कहता है कि पहले प्रभु का अनुभव करा दो तब हम सभी बुराइयाँ छोड़ देंगे। इस प्रकार "मन हराम और हुज्जतें" ढेर वाली उक्ति चरितार्थ होती है। वही नारद वाला किस्सा है कि वह कहता था कि—"है कोई स्वर्ग को चलने वाला ?", तब कोई पोते की पोती के ब्याह के बाद जाने का बहाना बनाता था और कोई साले की साली के मुन्ना होने के बाद चलने को तैयार था !! परन्तु आज हम फिर कहते हैं, बार-बार कहते हैं—"है कोई सच्चा प्रभु का प्यारा, है कोई स्वर्ग को चलने वाला ? है कोई पवित्रता रूपी पान का बीड़ा उठाकर रावण को राख में मिलाने की सेना में राम का बनने वाला ?

—जगदीश

❀ ❀ ❀

मेहसाना में नए सेवा केन्द्र का उद्-घाटन करती हुई दादी जी। साथ में ब्र० कु० सरला, ब्र० कु० मोहिनी तथा अन्य भाई बहनें

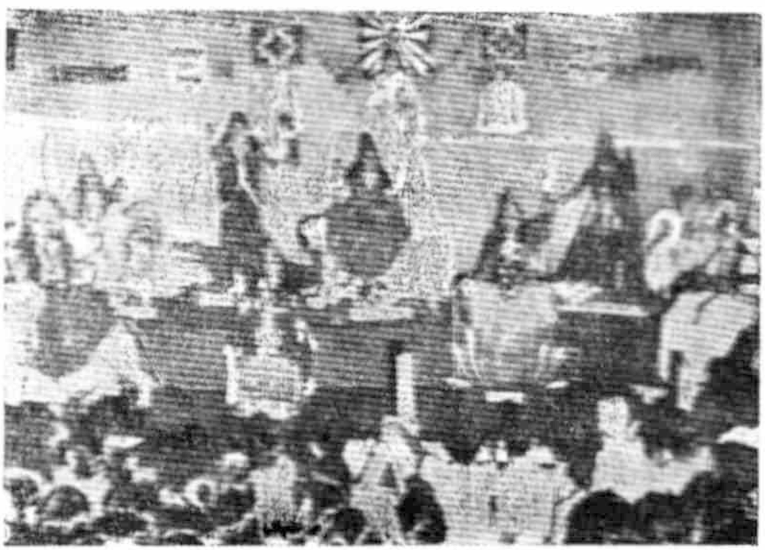

भावनगर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित "नव चैतन्य देवियों की झांकी" का एक दृश्य जिसे 60,000 आत्माओं ने देखा और लाभ उठाया

आत्मविश्वास

लेखिका :—ब्र० कु० दिव्य प्रभा, गोरेगांव (बम्बई)

आज का दुःखी मानव अशांत और उदास नज़र आता है। वह सोचता है कुछ और, होता उससे विपरीत है। कुछ दिनों पहले अखबार में खबर आई थी कि एक विद्यार्थी ने अपनी मैट्रिक की परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने कारण आत्म-हत्या की। दूसरी एक खबर थी —एक मनुष्य की नौकरी छूट गई, उसका वह आघात सहन न कर सका। उसे भय लगने लगा कि मैं अपना परिवार कैसे चलाऊँगा, तो उसने अपने दोनों बच्चे और अपनी पत्नी की हत्या की। तत्पश्चात् खुद ने भी गले में फाँसी डालकर अपना जीवन समाप्त किया।

इन दोनों किस्सों पर हम गौर से विचार विमर्श करें तो हमें यही महसूस होता है कि आज मानव आघात सहन नहीं कर सकता है, वह तुरंत ही भयभीत हो जाता है। किसी भी घटना का परिणाम वह मन ही मन में विपरीत ही सोचता है, उससे वह दुःखी, अशांत और उदास हो जाता है। निर्णय लेने में जल्दबाज़ी कर लेता है। उसका कारण यही है कि वह आज अपने आपमें विश्वास खो बैठा है। वह यही सोचता है कि कोई भी घटना घटी, उसका परिणाम बुरा ही आयेगा, वह बहुत परेशान हो जायेगा। वह यह सोच ही नहीं सकता कि यह जो घटना घटी है, वह भी मेरे भविष्य के अच्छे परिणाम के लिए घटी है। परन्तु नहीं, मानव की विचारधारा कुछ विपरीत ही चलती है। ऐसा क्यों ? उसका एक ही उत्तर है—**'आत्मविश्वास' की कमी**। मनुष्य आत्मविश्वास जब खो बैठता है तब उसे अपना जीवन अस्त-व्यस्त नज़र आता है। आज मनुष्य जीवन में आत्मविश्वास की शक्ति जो कि आवश्यक शक्ति है, आज का मानव उसी पूंजी को खो बैठा है और इसलिए चारों ओर दुःख, अशान्ति और उदासीनता छाई हुई नज़र आती है।

अगर हम अपने जीवन में आत्मविश्वास को बढ़ाने का सही तरीका जान लें, तो हम अपने जीवन की उन्नति में चार चाँद लगा सकते हैं।

आइये, यह आत्मविश्वास, जो हमारे मनुष्य-जीवन का मुख्य अंग है, तो उसकी परिभाषा को जान लें। आत्मविश्वास की परिभाषा इस प्रकार है—

(१) मैं आत्मा कोई भी विकट परिस्थिति में, किसी भी विकट कार्य में सरलता से सफ़लता हासिल कर सकती हूँ। इस बात का दृढ़ संकल्प ही **'आत्मविश्वास'** है।

(२) अनेक असफलताओं के मध्य में भी सफ़लता को देखना ही **'आत्मविश्वास'** है।

यदि हमारे ही कार्य में हमें विश्वास नहीं आता, मन कुँठित होकर यह विचार आते हैं—"यह कार्य मैं कर सकूंगा कि नहीं ? यह कार्य मुझसे होगा या नहीं ? यह कार्य करने में अनेक बाधाएँ आयेंगी, उन बाधाओं को मैं सरलता से पार कर सकूंगा या नहीं ? यदि पार कर सकूंगा, तो उसे अंत तक निभा सकूंगा या नहीं ? यह कार्य करने के पश्चात् यदि इसका परिणाम विपरीत आया तो ? तो लोग हमारा मज़ाक उड़ायेंगे ?"

यह हम आप सबका निजी अनुभव है कि इन प्रश्नों की कतार किसी भी कार्य के प्रारंभ में हमारी आँखों के सामने आ ही जाती है।

परन्तु हम एकान्त में बैठकर इन प्रश्नों की कतारों को सूक्ष्म में देखें, उस पर थोड़ा गौर करें, तो हमें यह ज्ञात होगा कि कोई भी कार्य करने से पहले हमारी मानसिक अवस्था उस कार्य की रीति को

अपनाने के लिए तैयार नहीं होती है। उस समय हमें यह डर रहता है कि मेरा क्या होगा ? परिणाम को न जानने के कारण विपरीत परिणाम ही सोचते हैं और उसके साथ-साथ ऋण भार के विचारों (Negative thoughts) की परम्परा शुरू हो जाती है।

मैं ही यह कार्य करने के निमित्त क्यों बनूं ? अन्य भी तो हैं कार्य करने वाले, वह कर लेंगे। यदि हमसे यह कार्य नहीं हुआ, तो लोग हम पर हसेंगे। मैं अपने सरलता से चलते हुए जीवन को इन झंझटों में क्यों डालूं ? इससे तो अच्छा ही है कि खाओ-पीओ और मौज करो। जो कार्य आसानी से हो सके, वह करो। दिमाग और शरीर को व्यर्थ कष्ट देने की क्या आवश्यकता है ?

अब हम इन ऋण भार के विचारों (Negative thoughts) को सूक्ष्म में जाँच करें, तो हमें यह ज़रूर महसूस होगा कि इन विचारों के पीछे कुछ न कुछ भय है। जब भय होता है, तो शंका उत्पन्न होती है। शंका भी क्यों उत्पन्न होती है ? क्योंकि हमें उस कार्य के बारे में पूरी जानकारी नहीं है। अर्थात् ज्ञान की कमी, उस कार्य करने पर उसके परिणाम के अनुभव की कमी।

यदि हम इन बुनियादी (नींवरूपी) विचारों की कमी को परखकर उन विचारों को ऋणभार (Negative) के बजाय धनभार (Positive) में परिवर्तित कर लें, तो कठिन से कठिन कार्य भी हमें आसान महसूस होगा। जीवन में प्रगति महसूस करेंगे, उदासीनता चली जाएगी, जीवन में नये प्रकाश की राह नज़र आएगी। क्या आप अपने जीवन को ऐसा बनाना नहीं चाहेंगे ? अगर चाहते हो, तो क्या करना होगा? हमें अपने विचारों में परिवर्तन लाना होगा। क्या विचार करेंगे ?

लोग कठिन से कठिन कार्य सरलता से कर सकते हैं, तो क्या मैं नहीं कर सकता ? कार्य करने में सफलता मिले या न मिले, परन्तु मुझे प्रयत्न ज़रूर करना है।

मानव जीवन में असफलता ही सफलता की चाबी है। कोई भी कार्य करने में यदि असफलता मिलती है, तो उसके दूसरे ही क्षण में सफलता रूपी प्रगति होती है। मान लो कोई एक कार्य में निष्फल हो जाता है, परन्तु यदि वह दुबारा उसी कार्य को सफल बनाने में दूसरा तरीका अपनाता है, तो वह अवश्य सफलता को पा लेता है। तो यह उसकी प्रगति हुई। भले ही यह प्रगति एक बार, दो बार, तीन बार या दस बार के प्रयत्नों के बाद ही मिलती है और हरेक बार के प्रयत्न में उसको उसकी निष्फलता की कमी की जानकारी होती रहती है परन्तु वह हरेक बार उसका सुधार करते-करते अंत में सफलता को अवश्य प्राप्त कर लेता है।

परन्तु उससे विपरीत ऐसा भी होता है कि यदि उस व्यक्ति को किसी कार्य में असफलता मिलती है, तो उससे वह उदास हो जाता और प्रयत्न ही छोड़ देता है तो क्या वह व्यक्ति अपने जीवन में कभी सफल हो सकता है ? कभी नहीं। यही व्यक्ति की कमज़ोरी है। इस कमज़ोरी को ही हमें निकाल देना है।

जैसे मेडम क्यूरी ने भी अपने जीवन में अनेक असफलताओं का सामना करके अथाह परिश्रम से अपने संशोधन के कार्य में रत रहकर रेडियम जैसी कीमती धातु को प्राप्त किया जो कि आज भी मनुष्य उसका उपयोग करके उनको आशीर्वाद देते हैं।

नेपोलियन बोनापार्ट ने "असम्भव" शब्द को अपने शब्दकोष में से ही निकाल दिया था। इसलिए उनकी गाथा आज भी इतिहास में मौजूद है।

गुजरात के कवि नर्मद ने भी कहा था **आप अपने जीवन को पुरुषार्थ रूपी अग्नि के अंदर स्वाहा कर ही दो, तो सफ़लता हुई ही पड़ी है।** इस एक छोटे-से वाक्य में कितनी दृढ़ता है, कितनी आत्मसमर्पणता का जोश भरा हुआ है।

जिस क्षण हमारे मन में यह संकल्प आया कि मैं अपने जीवन में किसी भी कार्य में सफल हो ही नहीं सकता। उसके दूसरे ही क्षण में हम अपने आपको कमज़ोर महसूस करने लगते हैं, भयभीत हो जाते हैं

और जो कार्य करना चाहिए, उससे विपरीत ही कर लेते हैं। इसलिए इस छोटे-से वाक्य में यही कहा गया है कि आप **सफलता और असफलता रूपी परिणाम को न सोचो, परंतु अपने पुरुषार्थ को शुरू कर ही दो। सफलता आपके पाँव चूमेगी।**

बाबा भी हमें अपने इस आध्यात्मिक जीवन को सफल बनाने के लिए मुरलियों में यही सावधानियाँ देते हैं कि "बच्चे, समर्थ संकल्प करो कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, मैं श्रेष्ठ कार्य करने के लिए ही इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अवतरित हुई हूँ।"

"बच्चे, अपने आपमें, बाप में और ड्रामा में निश्चय रखो। कार्य तो हुआ ही पड़ा है, तुम्हें सिर्फ हिम्मत करनी है। हिम्मते बच्चे तो मददे बाप।"

"बच्चे, कभी यह नहीं सोचो—यह कार्य कब होगा? कैसे होगा? ऐसे क्यों नहीं हो सकता है? ऐसे प्रश्नों की क्यू (Queue) में खड़े रह जाते हैं। इसलिए आपका पुरुषार्थ ठहरने वाला बन जाता है, परन्तु अब यह सोचना है कि मैंने यह कार्य कल्प पहले भी सम्पन्न किया था और अब मैं फिर से सम्पन्न कर रहा हूँ।"

"बच्चे, अपने ख्यालात उच्च रखो और लक्ष्य भी लक्ष्मी-नारायण बनने का रखो। जिसके आधार से ही आपकी आत्मा में उच्च लक्षण आयेंगे और कर्म भी श्रेष्ठ होंगे।"

"बच्चे, यह समर्थ संकल्प करो कि मैं आत्मा ऊँच ते ऊँच बाबा की संतान हूँ और भविष्य में ऊँच घराने में जानेवाली हूँ। इससे हमारे कर्म भी श्रेष्ठ होंगे।"

बाबा के इन महावाक्यों को भी सारे दिन में कर्म करते हुए याद करते रहेंगे, तो भी हमारा आत्मविश्वास दृढ़ होगा और बाबा की मीठी स्मृति भी रहेगी। जिससे आत्मा शक्तिशाली बनती जाएगी।

बाबा हमें ज्ञान का कवच पहनाते हैं इसलिए हम माया से कभी भी हार नहीं खा सकते।

इन कमज़ोरी के ख्यालात को **कागज का शेर** समझो। हम ऐसे ख्यालात को महत्त्व देकर उसको शेर से भी भयानक समझकर डरते रहते हैं। जैसे छोटे बच्चे डरते हैं कि वह हमें खा जाएगा। परन्तु वह कोई सचमुच शेर थोड़े ही है? वह तो हमारे कमज़ोर संकल्पों ने बनाया हुआ शेर है। उसको सत्य समझकर डरते नहीं रहना है। **परंतु कागज का शेर समझकर फाड़कर फेंक दो,** तो वह शेर नहीं दिखाई देगा और हमारा डर चला जाएगा।

हमारे अंदर आत्मविश्वास को लाने के लिए बाबा ने हमें बहुत खज़ाना दिया हुआ है, परन्तु वह खज़ाना इधर-उधर पड़ा हुआ है, उस खज़ाने को इकट्ठा करके हमें अपनी बुद्धि रूपी तिजोरी में संभाल कर रखना है। जब ज़रूरत पड़े, तब उसका इस्तेमाल करना है।

जैसे किसी एक मशीन के पुर्जे कोई कहाँ और कोई कहाँ बिखरे हुए होते हैं परन्तु जो अच्छा इन्जिनियर होगा, वह उन पुर्ज़ों को सही जगह पर इस्तेमाल करके मशीन को पूरा तैयार करके उस मशीन को उपयोग में लायेगा।

वैसे ही यदि हमअपनी आत्मविश्वास रूपी मशीन के पुर्जे जो कोई इधर और उधर बिखरे पड़े हुए हैं, अब उन सभी पुर्ज़ों को इकट्ठा करके सही जगह पर इस्तेमाल करके पूरी "आत्मविश्वास" रूपी मशीन तैयार करेंगे और उसको अपने निजी जीवन में उपयोग में लायेंगे तो सफ़लता हमारे पीछे-पीछे परछाई के समान चलेगी।

—:o:—

विजयीवत्स

(शान्तिलाल का मुकाबला अपने ही प्रतिरूप से)

शान्तिलाल—४ बज गया है, अब तो उठना ही चाहिए। अब तो शिव बाबा की याद में बैठने का समय है और फिर नहा-धो कर क्लास में भी जाना है।

संस्कार—जल्दी क्या है ? अभी सारा दिन पड़ा है। शिव बाबा को याद तो कभी भी किया जा सकता है और क्लास में भी रोज़ जाना क्या ज़रूरी है ? बातें तो वही हैं जो सुन ली हुई हैं; अब तो उन्हें जीवन में धारण करना है। अतः अब पन्द्रह-बीस मिनट या आधा घण्टा और लेट लेता हूँ, फिर ताज़ा होकर दिन-भर शिव बाबा को याद करता रहूँगा।

शान्तिलाल—नहीं, नहीं, इस संगम युग में ऐसा आराम हराम है। आराम तो शिव बाबा की याद में है और उस याद से फिर २५०० वर्ष तक आराम ही आराम है। अब जिस आराम की बात मैं सोच रहा हूँ यह तो बहानाबाज़ी है !

संस्कार—इसमें बहानाबाज़ी की क्या बात है ? कल रात को कुछ देर से नहीं सोया था ? आख़िर शिव बाबा के साथ हमारा बाप और बच्चों ही का तो सम्बन्ध है, और बाप तो सदा बच्चों के आराम में ही खुश होता है। यह सहज योग ही तो है, कश्म-कश करने की क्या ज़रूरत है ?

शान्तिलाल—देखने में तो यह सही बात है परन्तु वास्तव में तो यह मिथ्या तर्क है। बाप आराम में ख़ुश तो होता है परन्तु जिस आराम के कारण पढ़ने वाला बच्चा परीक्षा में फ़ेल हो जाय या कमाने वाला बच्चा अपने कर्त्तव्य, कार्य अथवा ड्यूटी पर न जा सके, उस आराम से पिता खुश नहीं हुआ करता। यह संगम युग ही सर्वोच्च पढ़ाई और सर्वोच्च कमाई का युग है और इसके लिए तो बाबा ने स्वयं ही प्रातः ४ बजे ईश्वरीय स्मृति में स्थिति के लिए श्रेष्ठ मत दी है ! इस समय उठने में तो हमारा ही कल्याण है।

संस्कार—परन्तु अपना विवेक भी तो प्रयोग करना है। बाबा ने यह भी तो कहा है कि निर्णय शक्ति का विकास कर उसका प्रयोग करो। अतः जबकि मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मैं अभी ताज़ा नहीं हुआ तभी तो बाबा की दी हुई निर्णय शक्ति का प्रयोग करके कह रहा हूँ कि कुछ और सो लेना चाहिए।

शान्तिलाल—इसे बाबा द्वारा दी हुई निर्णय शक्ति कहते हो ! आज तुम्हें हुआ क्या है ? शिव बाबा द्वारा दी हुई निर्णय शक्ति पुरुषार्थ को तीव्र करेगी या कम करेगी ? बाबा ने जो निर्णय शक्ति दी है, वह बुराई से बचकर भलाई की ओर बढ़ने के लिए दी है या स्वयं को हानि पहुँचाने के लिए ? तुम जो प्रयोग कर रहे हो, वह शक्ति नहीं वह तो कमज़ोरी है; वह आगे बढ़ाने वाली नहीं, पीछे हटाने वाली है; जगाने वाली नहीं, सुलाने वाली है। यही वेला तो योगाभ्यास के लिए सर्वश्रेष्ट है; इस समय तो भक्त भी उठ जाते हैं। बाबा ने कहा है कि इस समय मैं स्वयं चक्कर लगाता हूँ और योगी बच्चों की अवस्था की जाँच करता हूँ। अतः इस समय सोना तो अपना भाग्य खोना है।

संस्कार—यह ज्ञान तो सारा ठीक है परन्तु हरेक चीज़ का एक मौका होता। हर समय ज्ञान लागू नहीं किया जाता। आधा घण्टा सो लेने में कौनसी आफ़त आ जायेगी ? क्या मेरे सोने से सतयुगी सृष्टि का निर्माण रुक जायेगा ? आगे के लिए तो मैं कह ही नहीं रहा, केवल आज के एक दिन के लिये ही सोने की बात है। यों ही बेकार में बात को बड़ा समझा जा रहा है। किसी को क्या मालूम कि मैं प्रातः ४ बजे उठकर योग में बैठा था ?

शान्तिलाल—ऐसे ही समय तो ज्ञान का प्रयोग किया जाता है ! जब अज्ञान का पर्दा पड़ रहा हो और पुरुषार्थ में विघ्न उपस्थित हो रहा हो तब यदि हम ज्ञान का प्रयोग नहीं करेंगे तो क्या ज्ञान कोई सदा बन्द करके रखने की चीज़ थोड़े ही है ? शत्रु का वार होने पर ज्ञान-तलवार को म्यान से निकाल कर उसका प्रयोग नहीं करेंगे तो फिर ज्ञान का लाभ ही क्या ? फिर, संगम युग का आधा घंटा, वह भी अमृतवेले का जबकि शिव बाबा से मिलन मनाने और रुह को राहत देने का समय है, सो कर गंवाना आफ़त को लाना ही तो है। संगम युग की सब से बड़ी आफ़त तो माया है। शिव बाबा की 'श्रीमत' का उल्लंघन कर माया का मुरीद बनना आफ़त को लाना नहीं तो क्या अन्धेरे को मिटाना है ? मेरे सोने से सतयुगी सृष्टि का निर्माण तो नहीं रुक जायगा परन्तु मैं स्वयं सतयुग में समय पर पहुँचने से रुक जाऊँगा। और फिर बात केवल एक दिन, केवल आधा घण्टा सोने की नहीं है, बात तो आदत बनाने की और आज्ञा-पालन की है। अगर आज मैंने बाबा की कल्याणकारी आज्ञा टालने की आदत स्वयं को ही डाल दी तो फिर यह मेरी आदत पक्की होती जायेगी। स्वयं भगवान की श्रेस्ठ आज्ञा को टालने का तो संकल्प करना ही बहुत बड़ी बात है। इसके अतिरिक्त, बात यह नहीं है कि किसी और को मालूम ही नहीं पड़ेगा कि मैं ४ बजे उठा था और बाप-दादा की याद में बैठा था या नहीं; बात तो मेरे अपने कल्याण की है। दूसरा कोई नहीं देख रहा तो क्या मैंने स्वयं को धोखा देना है ? इसलिए मैं अब सोऊँगा नहीं क्योंकि अगर आज मैंने यह कमज़ोरी आने दी तो कल फिर यह संकल्प उठेगा।

संस्कार—तुम मेरी मानते ही नहीं हो, यह ठीक बात नहीं है? मैं तो तजुर्बे की बात कह रहा था कि अगर उठोगे भी और शरीर में ताज़गी भी न हुई तो योग क्या लगेगा ? इसलिए मैं तो केवल इतना ही कह रहा था कि अभी थोड़ा-सा सो लो, बाद में योग लगा लेना ! सारा दिन बाकी है, उसमें चलते-फिरते ईश्वरीय याद में रहना। मैं याद में टिकने के लिए मना थोड़े ही कर रहा हूँ···। मैं तो तुम्हारे स्वास्थ्य को सामने रखते हुए तुम्हें सुझाव दे रहा हूँ।

शान्तिलाल—यह सुझाव नहीं बहकाव है। तुम्हारी बात को तो न मानना ही ठीक है। बाद में चलते-फिरते तो योग लगाऊँगा ही परन्तु यदि अभी ताज़गी न हुई तो मैं अब भी बैठने की बजाय चल-फिर कर चुस्त होकर ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास करूँगा। तुम मेरे स्वास्थ्य की बात नहीं कह रहे, स्वयं की स्थिति बिगाड़ने की बात कह रहे हो। तुमने तो यों ही मेरे पाँच-सात मिनट तो बेकार कर दिये हैं। अब हटो यहां से ! तुम विवेक नहीं हो, तजुर्बेकार नहीं हो, तुम मेरे पुराने संस्कार हो और अब बिल्कुल बेकार हो। जाओ वरना ज्ञान का टाँसा लगेगा !

(संस्कार लड़खड़ा कर ध्वस्त होने लगता है और शान्तिलाल विजय की खुशी मनाते हुए उठ खड़ा होता है)।

—:o:—

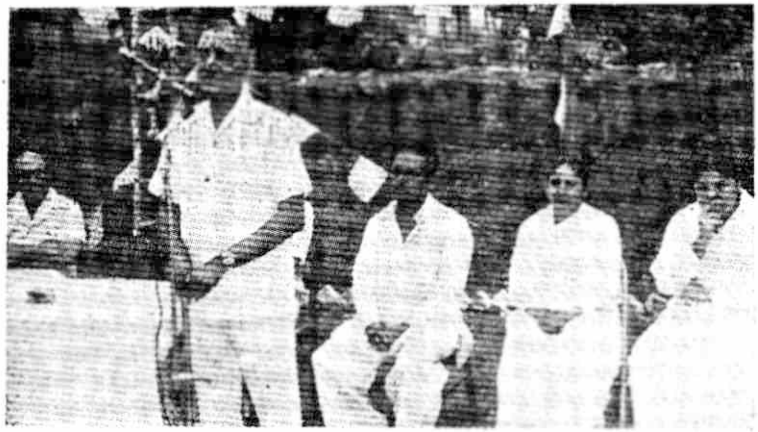

नारायण गांव में नये सेवा केन्द्र पर रखे गए कार्यक्रम में शहर के प्रमुख व्यक्ति पधारे। ब्र० कु० रमेश जी विद्यालय का परिचय देते हुए (दाएं से) ब्र० कु० सुन्दरी जी, ब्र० कु० बृजशान्ता जी, डा० शिवानी खैरे तथा डा० डांगे जी बैठे हैं

ब्र० कु० पार्वती बरगढ़ में आध्यात्मिक कार्यक्रम में प्रवचन करते हुए। मंच पर श्याम सुन्दर पण्डा, सब जज, ब्र० कु० प्रेम लता तथा कम्मो बैठे हैं

बहादुरगढ़ में हरियाणा के सिंचाई मन्त्री मेहर सिंह गढ़ी को ब्र० कु० कृष्णा ईश्वरीय सौगात देते हुए

हिसार में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन वहां के डिप्टी कमिश्नर कर रहे हैं

आबू पर्वत, पाण्डव भवन में मोरार जी भाई देसाई(भूतपूर्व प्रधान मन्त्री) पधारे। ब्र० कु० निर्वैर जी, दीदी जी दादी जी, तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहनें चित्र में उनके साथ हैं

हरदोई ज़िला जेल में ब्र० कु० सुमित्रा जी कैदियों को नैतिक मूल्यों पर समझा रही हैं। साथ में वहां के जेलर तथा अन्य ब्र० कु० भाई बैठे हैं

उदय पुर में आलोक स्कूल के प्रिन्सीपल प्रद-र्शनी समझाते हुए। ब्र० कु० शीला व्याख्या देते हुए

ब्र० कु० चक्रधारी, देहली

सभी नर-नारी और छोटे बच्चे परमात्मा को 'मात-पिता' या 'परमपिता' शब्द से सम्बोधित करते हैं परन्तु सहस्रों वर्षों से परमात्मा को इस सम्बन्ध वाचक शब्द से बुलाने पर भी कौन ऐसे जन हैं जिन्होंने परमात्मा द्वारा अपने लिए 'हे बच्चे' अथवा 'हे वत्स' शब्द उच्चारित होते सुने हैं? यह सौभाग्य की बात है कि अब इस पवित्र संगम युग में, ज्ञान नेत्र मिलने पर जब हम बच्चों को रुहानी दृष्टि मिली है तब हम परमात्मा को परिचय सहित 'परमपिता' अथवा 'बाबा' शब्द से याद करते हैं और वह हमें प्रभु-कृपा सहित 'हे लाडले बच्चे', 'सिक्की-लधे बच्चे', 'प्यारे बच्चे' आदि शब्दों द्वारा पुकार कर स्नेह देते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के तन में आकर जब वे हमें 'मीठे बच्चे'—ऐसा कह कर पुकारते तो आत्मा आनन्द से पुलकित हो जाती। स्वयं ब्रह्मा-बाबा जो सृष्टि के साकार पितामह हैं, जब 'मीठे-मीठे बच्चे'—इन स्नेह-सिग्ध शब्दों में सम्बोधित करते तो आत्मा प्यार से विभोर हो उठती। उसे लगता कि—'ऐसा प्यार करेगा कौन ?'—इस पहेली का उत्तर क्रियात्मक रूप में मिल गया है। वह पवित्रकारी प्यार जिसने नहीं पाया, 'आओ बच्चो','प्यारे बच्चो' ये शब्द जिस आत्मा ने अपने लिए उस परमपिता से नहीं सुने वह आत्मा…। फिर, शारीरिक रूप से जो बालक अवस्था में आत्माएँ होतीं, उन्हें तो बाप दादा अर्थात शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा इतना प्यार करते कि बात मत पूछिये। उन्हें गोद में लेकर उनके सिर पर वरद हस्त फेरते हुए, उनके मुख मण्डल में रुहानियत सींच देना, उनको मीठी 'टोली' (प्रसाद) देकर खुश कर देना, ईश्वरीय ज्ञान, गुण और राजयोग के रहस्यों को उन्हें सरलतम भाषा में समझाकर निहाल कर देना, अपने प्यार दुलार से उन्हें बुरी आदतों से सहज ही छुड़ा देना—यह बाप-दादा से ही सीखने जैसी कला हमने देखी। छोटे बच्चे बाबा को छोड़ते ही न थे और बाबा को भी वे बहुत प्यारे लगते थे। बाबा कहते जिन्हें संसार 'नन्हें-मुन्हें' कर पुकारता है वे ऐसा कार्य करके दिखायेंगे कि बड़े-बड़े भी दंग रह जायगे। अतः 'आओ बच्चो' शब्द, बल्कि 'आओ मीठे बच्चो' शब्द बच्चों को 'बाप दादा' की अर्थात शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा की याद दिलाने वाले होने चाहिएं।

अब बात सुनो! बाप दादा के सामने हम सभी बच्चे तो थे ही। इसलिए वह हमें सतयुग से लेकर कलियुग तक का सारा इतिहास एक कहानी की तरह सुनाया करते। जैसे हम ऐसी कहानियां पढ़ते हैं जो "एक बार की बात है कि एक राजा था और एक रानी थी"—ऐसे शब्दों से शुरू होती है, वैसे ही बाप-दादा करते थे कि विश्व की कहानी भी इसी प्रकार की ही एक दिलचस्प कहानी है। वह कहानी तो ऐसी है कि कभी समाप्त ही नहीं होती क्योंकि ख़तम होते ही वह फिर शुरू हो जाती है। इसलिए वह कहानी तो अपने ईश्वरीय सेवाकेन्द्र की शिक्षिका बहनजी से ही सुन लेना परन्तु एक और कहानी जिसका बाप-दादा कई बार उदाहरण दिया करते, वह हम इस बार आपको सुनाते हैं क्योंकि तुम लोग सदा कहानी ही की मांग किया करते हो। अब तुम नानी अम्मा और दादी अम्मा को कहानी के लिए ज्यादा तंग न करना, हम ही एक ऐसी कहानी सुना देते हैं कि अगर उस पर आप ध्यान दोगे तो आपका अपना जीवन भी लोगों के लिए एक सफ़ल कहानी बन जाएगा।

ठीक है ? अच्छा सुनो कहानी, हमारी ज़बानी···ठीक है ?

बात यह है कि 'गुल बकावली' का एक किस्सा मशहूर है। वह किस्सा तो बहुत ही लम्बा है जो कि एक वक्त में तो आप सुन भी नहीं सकोगे। परन्तु उस किस्से का ख़ुलासा अर्थात सार यह है कि गुलबकावली नाम से एक राजकुमारी थी। उसका बहुत बड़ा राज्य था और थी भी बहुत सुन्दर। हर देश का राजकुमार चाहता था कि गुलबकावली उसी के गले में वर माला डाले क्योंकि गुलबकावली के ख़ज़ाने बहुत भरपूर थे, उसका राज्य भी बहुत विशाल था, उसकी बुद्धि बहुत तेज़ थी और वह सब प्रकार से भाग्य और बल से युक्त थी। परन्तु गुलबकावली ने शर्त यह लगा रखी थी कि वह अपना हाथ उसको देगी जो उसे शतरंज के खेल में जीतेगा और अगर उसे कोई भी नहीं जीत सकेगा तो वह सारी आयु कंवारी ही रह जायेगी। किसी भी देश का राजकुमार उससे शतरंज खेलने के लिए स्वीकृति लेकर आ सकता था, परन्तु गुलबकावली ने यह स्पष्ट बता दिया हुआ था कि यदि राजकुमार उससे हार गया तो वह जीवन पर्यन्त गुलबकावली के कारागार में रहेगा या उसकी नौकरी करेगा और यदि वह जीत गया तो गुलबकावली अपने राज्य-सहित उसी की हो जायेगी।

फिर किस्सा यह हुआ कि बहुतेरे राजकुमारों ने दाव लगाया। बारी-बारी सभी हार गये। जो शतरंज के दाव-पेच खूब सीखकर तथा अभ्यास करके आये थे, और स्वयं को शतरंज की चाल के माहिर समझते थे, वे भी हार गये। कितने ही शहज़ादे अपना देश छोड़ कर आये और हार कर गुल बकावली के बन्दी-खाने में बन्द हो गये या तो उसकी नौकरी करने लगे।

वास्तव में बात यह थी कि गुलबकावली सदा रात्रि ही को शतरंज का खेल खेलती थी, दिन में नहीं। खेल के स्थान पर वह एक सिधे हुए (trained) चूहे पर दीपक जगाकर रखती थी और उस दीपक की रोशनी में खेल चलता रहता था। जब वह यह देखती कि शायद वह हार जायगी तो वह झट से एक चाल चलती थी। उसके पास एक पालतू बिल्ली थी; वह उस बिल्ली को चूहे की ओर छोड़ देती। चूहा बिल्ली को आते देखकर भाग जाता और, इस प्रकार, दीपक बुझ जाता था। अन्धेरा हो जाने पर गुल बकावली शतरंज के गोटों को जल्दी से बदल कर ऐसे तरीके से रख देती कि विजय उसकी हो। फिर ज्योति जगाने पर खेल शुरू होता और शहज़दा हार जाता। अब जो हार जाता उसे तो बन्दी ही बना दिया जाता; इससे बाहर, दूसरे किसी को यह रहस्य मालूम ही न पड़ता कि आख़िर बात क्या है।

परन्तु एक चतुर राजकुमार था; उसने पहले ही से इस भेद का पता लगा लिया था। अतः वह इसके लिये तैयार हो कर गया था। वह ज्योति को बुझने ही न देता। अतः परिणाम यह हुआ कि वह बाज़ी जीत गया। गुलबकावली और सारा राज्य उसी का हो गया।

यों गुलबकावली के जो किस्से मिलते हैं, उनमें थोड़ा-बहुत अन्तर लिखने वाले कर ही देते हैं। परन्तु कहानी का मध्य भाग ऐसे है जैसे बताया है।

यह कहनी तो लौकिक है परन्तु बाबा तो हर बात को लौकिक से अलौकिक बना देते। वह हर बात में से गुण ग्रहण करने की विधि निकाल लेते।

'गुल' शब्द का अर्थ है—'फूल' और 'बका' शब्द का अर्थ है अविनाशी। अतः 'गुल बकावली' वह फूल है जो कभी न कुमलाये, कभी न मुर्झाये और सदा उस पर बहार ही रहे। सतयुगी सृष्टि को 'सदाबहार' वाली सृष्टि कहा जाता है और उसमें लक्ष्मी का वरण करना ही गुलबकावली को जीतना है। दूसरे शब्दों में नर से श्रीनारायण बनना ही गुलबकावली को अपना बनाना है। जो श्रीनारायण रूप में देवपद पाता है, उसे अटल-अखण्ड राज्य मिलता है और वह सौभाग्यशील, सम्पन्न रूपवती श्री लक्ष्मी का जीवन-साथी बनता है। परन्तु सारी बात यह है कि इस खेल में **'माया बिल्ली'** दीपक बुझा देती है। जो 'माया' रूपी बिल्ली द्वारा अपने ज्ञान का दीपक बुझने

न दे वही इस खेल को जीतकर विश्व महाराजन बन सकता है। इसी कहानी के आध्यात्मिक भाव को ले र बाबा 'माया' को 'माया बिल्ली' कहा करते और शिक्षा देते कि, बच्चे, देखना, कहीं माया बिल्ली दीपक न बुझा दे वरना अज्ञानान्धकार में हार खा जाओगे। इस प्रकार क्षीर-नीर विवेक से बाबा इस कहानी से यह भाव ग्रहण करने के लिए कहते।

तो देखा आपने ! यह कहानी भी है और 'आखानी' (आख्यान) भी। 'आखानी' वह है जिस कहानी के द्वारा कुछ शिक्षा दी जाय। बाबा तो शिक्षा दाता है; वे मनोरंजक तरीके से ऐसी शिक्षा देते कि मनुष्य का बेड़ा पार हो जाय। तो अब केवल कहानी ही याद न रखना बल्कि उसकी शिक्षा भी धारण करना तो अपना जीवन भी एक सफ़ल कहानी बन जायगा।

❀ ❀ ❀

तिनसुकिया में दुर्गा पूजा के अवसर पर निकाली गई शोभा यात्रा का दृश्य

समाचार चित्रों में

अजमेर में झांकी को देखते हुए भक्तों की भीड़

आध्यात्मिकता और राज विद्या

क्या ब्रह्माकुमारी बहिनों के लिए बी० ए० व एम० ए० की डिग्री लेना आवश्यक है ?

हमको मन की शक्ति देना माया विजय करें।
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें॥

अहा ! कितना प्रेरणादायक है यह गीत। सच ही तो है। जब तक हम स्वयं का कल्याण नहीं करते, तब तक दूसरों का कल्याण चाहते हुए भी नहीं कर सकते। और फिर हमारे प्राण प्यारे परमपिता परमात्मा ने भी तो यही शिक्षा दी है, बच्चे ! विश्व कल्याण से पहले स्वकल्याण करो, स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन करो, स्वस्थिति से दूसरों की परिस्थिति को बदलो। लेकिन क्या ऐसा करना सबके लिए सम्भव है ? तो शायद इसका उत्तर होगा नहीं। क्योंकि बाबा ने कहा है कि यह कार्य वही कर सकता है जो अनेक प्रकार के बन्धनों से मुक्त होगा। और बन्धन मुक्त रहने का वरदान भी बाबा ने विशेष रूप से कन्याओं को ही दिया है। क्योंकि जो गृहस्थी हैं उनको हर तरफ़ से तोड़ निभानी पड़ती है, अनेक सम्बन्ध होने के कारण उन्हें अपना हिसाब किताब चुक्तु करना ही है। लेकिन कन्याओं में कुछ ऐसी कन्याएं भी हैं जो सभी बन्धनों से मुक्त होते हुए भी एक ऐसे बन्धन में बंधी हुई हैं जो नज़र नहीं आता और वह है मन का बन्धन। जी हाँ ये है मन का बन्धन, जो कि विशेष रूप से पढ़ाई के विषय में सोचता रहता है कि मुझे अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए बी० ए० व एम० ए० की डिग्री अवश्य लेनी चाहिए।

जबकि देखा गया है कि ज्यादातर इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में बहनें मैट्रिक व हायर सेकेण्डरी कर चुकी हैं लेकिन फिर भी कभी कभी इन बहनों के मन में यह संकल्प आता है कि हम भी बी० ए० व एम० ए० करके अपने शिक्षा स्तर को बढ़ायें ताकि हमारे पास जो पढ़े-लिखे, बुद्धिजीवी आते हैं उनको हम बाबा का ज्ञान ठीक रीति दे पायें। ऐसे ऐसे संकल्प जब मन में उत्पन्न होते हैं तो उनका ठीक समाधान कैसे करें।

इसी विषय को लेकर हम अपने अनुभव के आधार से कुछ विचार आपके समक्ष रखते हैं आशा है कि इनको ध्यानपूर्वक पढ़ने और गहराई में जाने से हमारी बहनें अपना निर्णय आसानी से कर सकेंगी।

यह राय, यह विचारधारा उन बहनों के लिए है जिन्होंने मैट्रिक व हायर सेकेण्डरी तक पढ़कर ब्रह्माकुमारी बनने का लक्ष्य रख करके बाबा के किसी भी सेवा केन्द्र पर रहती हैं व रहने का निश्चय किया है।

शिव बाबा, जो भाग्य विधाता हैं उसने आकर हमको इस पुराने कलियुगी संसार रूपी गटर से निकाल अपना गोद का बच्चा बनाया और बाबा ने अपने घर अर्थात् सेन्टर में आश्रय दिया, जहाँ हम बाबा की छत्रछाया में २४ घण्टे रहे—जहाँ माया का वार न हो पाये, जहाँ इस पुरानी दुनियाँ का लेशमात्र भी परछाया न पड़े। लेकिन खेद की बात है कि फिर भी हम में से कुछ बच्चे बाबा की छत्रछाया में से निकल माया की नगरी में जाना चाहते हैं। हम बाबा के सिकीलधे बच्चे हैं। ज्ञान सागर, सर्व शक्तिवान बाप के संग में हम अधिक से अधिक उनसे ज्ञान, शक्ति, सुख आनन्द ले सकते हैं। मनसा-वाचा-कर्मणा को पवित्र बना सकते हैं। इसको कोई विरला ही समझ सकता है कि संगम युग ही एक ऐसा युग है जब कि परमपिता परमात्मा की डाइरेक्ट पालना व परवरिश ले सकते हैं। और फिर बाबा ने न केवल

अपना बच्चा बनाया किन्तु ईश्वरीय विद्यार्थी का सुन्दर टाइटिल भी दिया ।

अब हम सोचें कि ईश्वरीय विद्यार्थी का मुख्य लक्ष्य क्या है और जिस्मानी विद्यार्थी का लक्ष्य क्या है ? ईश्वरीय विद्यार्थी का लक्ष्य है मनुष्य से देवता बनना तो क्या देवता बनने लिए बी० ए० व एम० ए० की डिग्री ज़रूरी है ? जबकि बाबा का कहना है "बच्चे पवित्र बनो, राजयोगी बनो।"

लेकिन फिर भी संकल्प आता है कि रुहानी पढ़ाई में भी तो चार विषय है ज्ञान, योग धारणा, और सेवा। सेवा भी तीन प्रकार की है मनसा, वाचा, कर्मणा। सेवा के क्षेत्र में प्रभावशाली बनने के लिए जिस्मानी पढ़ाई का उच्च स्तर बनाने की प्रबल इच्छा बनी रहती है। अब देखा जाए तो जिस्मानी पढ़ाई का सम्बन्ध केवल वाचा से है जबकि बाबा का कहना है बच्चे ! अब चैतन्य म्यूज़ियम, चैतन्य देवी बनकर सेवा करो। योग युक्त, ज्ञान स्वरूप, और दिव्य गुण मूर्त फ़रिश्ता बनो जो आने वालों को साक्षात्कार हो, शान्ति का अनुभव हो और वो यह महसूस करें कि वास्तव में मैंने परमात्मा को और उसके सच्चे ज्ञान को प्राप्त किया है।

अतः अन्त में यही कहना उचित होगा कि ईश्वरीय विद्यार्थी ने जब आत्मा, परमात्मा, सृष्टि चक्र, कर्मों की गहन गति का ज्ञान प्राप्त कर लिया तो फिर बी० ए० व एम० ए० की डिग्री की इच्छा क्यों ?

बूझो तो जानें

(ज्ञान पहेलियाँ)

ब्र० कु० विश्वकर्मा, झांसी

(१) रातदिवस चलता रहता है, कभी नहीं वह थकता।
एक समय के बाद पुनः, वैसे ही से फिरता॥

(२) आसमान से बातें करता, कभी नहीं वह रुकता।
सबके पास सदा रहता, पर नहीं पकड़ में आता॥

(३) जन्मभूमि ईश्वर की है वह, मधुबन वह कहलाता।
उसका नाम आप बतलाओ, जो हरदम लिखा जाता॥

(४) नहीं अशान्ति वहाँ होती है, नहीं अशान्ति का कर्त्ता।
सब जन वहां मौजूद रहें, पर बात न कोई करता॥

(५) ईश्वर भी जिसके बसमें हो, बसमें हो दुनियां सारी।
उसका जल्दी नाम बताओ, जो हरता गम सभी हमारी॥

(६) चार युगों का नाम लिखा है लिखा इतिहास हमारा।
उस चित्र का नाम बताओ, जिसमें विवरण हो सारा॥

(७) सबके साथ सदा रहता है, सबसे कर्म कराता।
जो जैसा फिर कर्म करे, वैसा ही बन जाता॥

उत्तर—(१) सृष्टिचक्र (२) मन (३) पाण्डवभवन (४) परमधाम (५) ड्रामा (६) सीढ़ी (७) संस्कार॥

देख कबीरा रोया

कबीर जी भी कमाल के आदमी थे। उनके पुत्र का नाम 'कमाल' और पुत्री का नाम तो 'कमाली' था ही परन्तु वे तो उनके पिता ठहरे। उन्होंने जो दोहे लिखे हैं, उनमें से कई-एक की अन्तिम पंक्ति है—'देख कबीरा रोया !' निम्नलिखित पद देखिये—

चलती को गाड़ी कहें
बना दूध का खोया,
रंगी को नारंगी कहें
देख कबीरा रोया।

यों बात रोने की नहीं है, हँसने की ही है क्योंकि दुनिया की उलटी चाल पर तो हँसी ही आनी चाहिए जैसे कि प्रायः किसी व्यक्ति के ऊटपटाँग बोल पर आया करती है परन्तु कबीर जी सन्त जो ठहरे, उन्हें संसार पर दया आती थी। कैसे अजीब लोग हैं कि जो चलने वाला साधन या वाहन है उसे लोग 'गाड़ी' कहते हैं जबकि 'गाड़ी' उसे कहना चाहिए जिसे गाड़ दिया गया हो ! और देखिये, दूध को काढ़ते जाने से उसका जो स्वादिष्ट सार बच रहता है, जिसका नाम लेने से ही सभी के मुख में लार आ जाता है, उसे लोग कहते हैं—'खोया' अर्थात जो खोया गया ! जिसे मुश्किल से पाया गया और जिस ठोस चीज़ को पाने-से हर्ष हुआ, क्या उसे 'खोया' कहना बेतुकी बात नहीं है ? आगे बढ़िये तो लोग 'रंगी' को 'ना-रंगी' कह रहे हैं। संतरे का इतना लुभावना तो रंग होता है और उसे कहते हैं—'ना-रंगी', अर्थात जिसका रंग ही नहीं है। इसमें कबीर जी का कमाल यह है कि उन्होंने लोगों के ऐसे विचित्र व्यवहार पर ध्यान दिया और ऐसे उदाहरणों को इकट्ठा करके उसके साथ लिख दिया कि 'देख कबीरा रोया।'

परन्तु देखा जाये तो ये बातें इतनी रुलाने वाली हैं नहीं। ये अजीब ज़रूर हैं परन्तु अहानिकर (Harmless) हैं। लोगों की रुलाने वाली बातें तो और ढेर-सारी हैं जिनसे यह संसार ही एक शोकालय-सा बन गया है।

सबसे पहली अजीब बात तो यह है कि लोग देह को ही 'आत्मा' अर्थात 'स्वयं' माने हुए हैं। घर और घर का स्वामी तो अलग-अलग होते हैं परन्तु शरीर रूप 'पुर' और उसमें के 'पुरुष' को अथवा 'क्षेत्र' और 'क्षेत्रज्ञ' को एक मान लेना कितनी अजीब बात है। रंगी को नारंगी मान लेने से संतरे के रंग में अन्तर नहीं आता परंतु स्वयं को देह मान लेने से बहुत ही अधिक अन्तर पड़ जाता है। देह तो नाशवान है, स्त्री रूप या पुरुष-रूप है, उसमें तो देश-भेद, रंग-भेद हैं, अतः इस देहवाद से संसार में अनेक झगड़े पैदा हुए हैं। यदि मनुष्य यह जानता होता कि हरेक के जैसे घर का नक्शा अलग-अलग होना, कोई झगड़े की बात नहीं है वैसे ही देह-भेद, देश-भेद आदि झगड़े का कारण क्यों बन जाना चाहिये ? परन्तु ये झगड़े के कारण तो बने ही हुए हैं। अतः यदि कबीर आज की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति देखता तो पहले तो वह इसका उल्लेख करता। इसी भेद पर पैदा हुए झगड़ों से न जाने कितने लोग मरते हैं और माताएँ अपने बच्चों के लिए और बच्चे अपने माता-पिता के लिए सिसक-सिसक कर रोते हैं।

इसी प्रकार कितने ही ईश्वरवादी आपको ऐसे मिलेंगे जो आत्मा ही को 'परमात्मा' मानते हैं। वे परमात्मा और आत्मा में कोई भेद ही नहीं मानते। परन्तु, वास्तव में कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली। कबीर तो परमात्मा को 'लाल' मानता है और कहता है—

"लाली देखन मैं गया, मैं भी हो गया लाल"

परन्तु आज तो मानव परमात्मा को मानता ही नहीं तब वह उस 'लाल' से 'लाली' या सर्वशक्तिमान्

से शक्ति कैसे पायेगा ? परमात्मा को 'आत्मा' से भिन्न न मानने का ही तो यह परिणाम है कि आज आत्मा निर्बल हो चुकी है और मनोविकारों के वशीभूत होकर दुःख पा रही है। अतः वास्तव में रुलाने वाली बात तो यही है और इस कारण कबीर का आधुनिककालीन पद इस प्रकार होना चाहिये—

स्वयं को शरीर कहें
अज्ञान में मानव सोया,
आत्मा को ही प्रभु कहें,
देख कबीरा रोया।

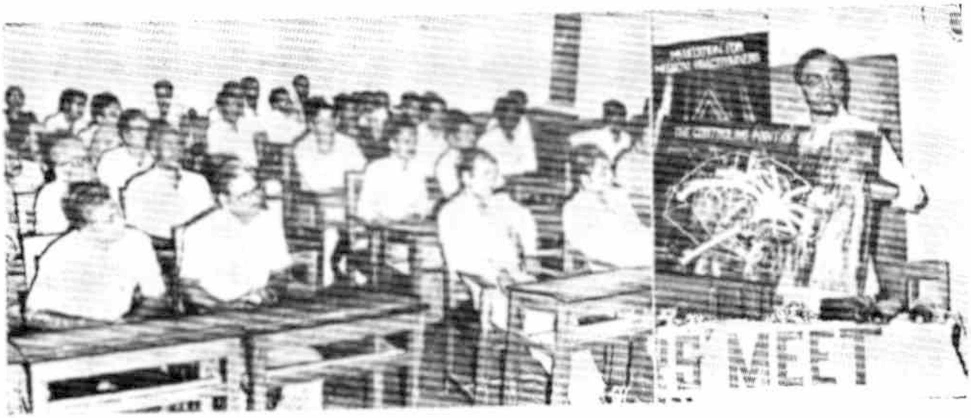

नादेड में डा० गरीश 'शरीर में आत्मा का स्थान' पर समझाते हुए। उपस्थित डाक्टर बड़े ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं

ईश्वराय सेवा समाचार चित्रों में

दादी निर्मल शान्ता जी कलकत्ता में सूर्य नगर में दुर्गा पूजा उत्सव का उद्घाटन करते हुए

अम्बाला कैन्ट में चिकित्सक सम्मेलन के अवसर पर मंच पर (दाएं से) ब्र० कु० आशा, डाक्टर एस०सी० जोशी, ब्र० कु० कृष्णा, डा० एस० के० जैसवाल, डा० प्रताप जी, तथा अमीर चन्द जी शिव बाबा की याद में बैठे हैं

परिवर्तन की आधार शिला

ले० ब्र० कु० निर्मला, चित्तौड़गढ़

चाहे नारी की गौरव गाथा से आकाश क्यों न गूँज उठा हो, चाहे उसके पतन से पाताल तक क्यों न काँप उठा हो परन्तु नारी के लिये "न सावन सूखे न भादों हरे" की कहावत ही चरितार्थ होती रही है। वह जहाँ की तहाँ है स्वयं कभी आगे न बढ़ी है न किसी ने उसे बढ़ाया, और ही लोगों ने सदैव इस दयनीय स्थिति को स्वर्ण अवसर समझ अनुचित लाभ उठाया है। प्राचीन से प्राचीनतम काल में नारी ने त्याग, संयम तथा आत्मदाह की आग में अपना सारा व्यक्तित्व,सारी इच्छाएं तिल-तिल गलाकर एवं स्वयं को कठोर आदर्श के साँचे में ढालकर एक जीवित देवता की मूर्ति गढ़ डाली। लेकिन क्या संसार इससे प्रभावित हुआ ? या इतनी विशाल व श्रेष्ठ रचना के बदले में कुछ नारी को दिया ? हमेशा उसके त्याग को दुर्बलता का सेहरा बाँधकर और ही इतिहास के पृष्ठों को रंगीन किया। लेकिन यह भी सत्य है कि धारा को चीरकर तैरने में जो आनन्द और जो आत्म-विश्वास तैराक को प्राप्त होता है उसकी तुलना धारा में बिना पुरुषार्थ बहने वाले व्यक्ति से नहीं की जा सकती है। नारी में आत्म-विश्वास व आत्म-शक्ति की विशेषता इसी दुर्लभ पुरुषार्थ का ही तो प्रतिफल हैं।

इन दिनों मनुष्य को अधिक विकसित, अधिक समर्थ और अधिक सशक्त बनाने के प्रयास बड़ी तेज़ी से चल रहे हैं। इस विषय में एक नारी अपने जीवन में जितना त्याग करती है, पुरुष उतना त्याग सौ जन्मों में भी नहीं कर सकता। इसलिये ही स्वामी विवेकानन्द ने कहा है "पाँच सौ पुरुषों को जिस कार्य को करने में पचास वर्ष लग जाते पर पाँच सौ देवियाँ उसे कुछ ही सप्ताहों में सम्पन्न कर डालेंगी"

शारीरिक शक्ति में नारी पुरुष से एक कदम पीछे रह जाती है पर आत्म-बल में वह पुरुष को पीछे छोड़ जाती है। इतिहास साक्षी है कि पुरुष की शक्ति को सदैव स्त्रियों ने दिशा दी है। जहाँ पुरुष के द्वारा स्थिति बिगड़ी है तो नारी ने उस स्थिति को संभाला है। क्योंकि कोरी शक्ति से शासन हो सकता है समाज नहीं बन सकता। नारी का मानसिक विकास पुरुषों के मानसिक विकास से कुछ भिन्न अवश्य है पर अधिक तीव्र एवं श्रेष्ठ है। इन्हीं विशेषताओं के कारण उसका व्यक्तित्व विकास पाकर समाज के उन अभावों की पूर्ति करता रहता है जिनकी पूर्ति पुरुष स्वभाव द्वारा संभव नहीं है। नारी को न किसी पर विजय चाहिये न किसी से पराजय; न किसी पर प्रभुता चाहिये न ही किसी का स्वयं पर प्रभुत्व। उसे तो चाहिये केवल अपना वह स्थान जिससे वह पवित्रता की स्थापना का उपयोगी अंग बन सके।

महान विजेता नेपोलियन ने भी अपनी समस्त सफ़लताओं का श्रेय अपनी मां को देते हुए कहा था "कि राष्ट्र के उत्थान के लिये अच्छे नागरिकों का विकास शासन नहीं वहाँ की माताएँ कर सकती हैं।"

विकसित मन:स्थिति वाली नारी प्राचीन काल से एक एक महान नर उत्पन्न करती रही है और समाज सर्वतोमुखी प्रगति करता रहा है आज यदि समाज में बुराइयों का बोलबाला है तो इसका एक बहुत बड़ा कारण है नारी की पिछड़ी अवस्था।

समाज चाहे आकाश की तरह विस्तृत है फिर भी उसमें नारी की व्यापकता असीम है। इस दुनिया की आधी जनसंख्या नारी की है। नारी की स्थिति समाज का विकास नापने का मापदंड या यंत्र कही जा सकती है।

कई लोगों ने नारी जीवन दुर्बल, पशुतुल्य बता कर आलोचना कर उसे जानवर से भी अति गिरी हुई स्थिति में वर्णन किया है। लेकिन कुछ भी हो अपनी समस्त शक्तियों से पूर्ण महिमामयी नारी के सम्मुख किसी का मस्तक आदर से नत हुए बिना नहीं रह सकता, यह अनुभव की बात है। भारतीय संस्कृति ने जब विकास के ऊँचे शिखरों को छुआ था तब उसने "यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" से नारी की ऊँचाई को आकाश की बुलन्दियों तक स्पष्ट किया। लेकिन जब समाज व संस्कृति का स्तर नीचे आ गया तो अपने स्तर अनुसार ही नारी को निकृष्ट दृष्टि से देखा गया।

समाज में जो भी नयी व पुरानी परम्पराएँ प्रचलित हुई, उन्हें नारी ने ही तो सुदृढ़ आधार दिया। नारियाँ ही क्यों ऐसे विभिन्न व्रत, अनुष्ठान करती हैं, जिनके साथ उत्तम पति प्राप्त होने की कामना और आशा जुड़ी रहती है क्योंकि भारत में नारी उत्तम आचरण का प्रतीक है। शंका पुरुष को ही लेकर उत्पन्न होती है क्योंकि वह कोई मर्यादा तोड़ भी देता है तो इतना महत्व नहीं दिया जाता।

सम्मान और प्रेम सदैव मनुष्य को व संसार को ऊपर उठाता है। यही संसार में गौरव व जिम्मेवारी की भावना पैदा करता और इस सम्मान व प्रेम की खान है स्वमेव नारी। इस गुण से वह संसार को कितना भी ऊंचा उठा सकती है।

युनानी सभ्यता और संस्कृति में तो मातृशक्ति की अनन्य अराधना की गई है और एक प्रकार उसे ही सर्वोच्च शक्ति माना है। पर इसके विपरीत नारी को धर्म ग्रंथों तक को पढ़ना भी वर्जित माना गया है। याद रहे कोई भी एक नियम वा आदर्श सब काल, सब परिस्थितियों के लिये नहीं बनाया जाता। हर वस्तु में समय के अनुसार परिवर्तन संभव ही नहीं अनिवार्य हो जाता है। परिवर्तन नहीं तो प्रगति नहीं, विकास रुककर नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। और फिर नारी के लिये जो भी विचार व दृष्टिकोण नियम बनाये सभी पुरुषों ने ही। कोई भी चीज़ निर्माण करते समय निर्माता स्वयं का फ़ायदा व प्राप्ति ज़रूर निकालेगा जो कि स्वाभाविक है और जो पुरुष जाति को प्राप्त हैं। क्या हम यह नहीं जानते कि सवेरे पूर्व दिशा के अंधकार से फूट निकलने वाली प्रकाश की किरणों के पुँज को हम आकाश के किसी एक कोने में बाँधकर नहीं रख सकते, ठीक वैसे ही नारी जाग्रती द्वारा विश्व नवनिर्माण की उफनती लहर भी किसी कोने में कदापि बंदी नहीं बनाई जा सकती। फिर इतिहास भी प्रमाणित करता है कि कोई भी दासत्व व बंधन बहुत काल के उपरान्त एक अद्भुत संहारक शक्ति में परिवर्तन हो जाता है जिसकी बाढ़ को रोकने में इस दुनिया की कोई भी दीवार समर्थ साबित नहीं हो सकी। नारी द्वारा विश्व परिवर्तन भी उसी बाढ़ के समान है जिसे कोई रोक नहीं सकता। उसी सूर्य की किरण के समान है जो आलोचना व तिरस्कार के अंधकार से फूट चुकी है, उसे कोई कोने में बांधा नहीं जा सकता। फिर जिसके अन्दर आध्यात्मिक शक्ति है, उसे सारी दुनिया भी मिलकर दबा नहीं सकती—ठीक मीरा की तरह। यदि कुछ नारियाँ आज शारीरिक शक्ति, विद्या, बुद्धि में कुछ पिछड़ी हुई दिखाई देती हैं तो इसका एक ही कारण है उसने अपनी समस्त शक्तियों को दुनिया के उच्च निर्माण में लगा दिया है। नारी की इस युग में उपयोगिता उस चंदन वृक्ष के समान है जिसे केवल जलाकर कोयला बनाकर बेचा जाता है। उससे लाभ लेने की कलुषित विधि गलत के साथ मंहगी भी है। यह तो सुन्दर फूलो के बगीचे में बकरी को चराने समान है।

जय शंकर प्रसाद जी ने नारी को श्रद्धा और विश्वास के रूप में देखा है। दूसरी ओर संसार ने नारी को 'अबला' शब्द से भी आत्मकृति करना न छोड़ा। उसे शक्ति हीन माना गया है। लेकिन कुछ कार्य बुद्धि से ज़्यादा होता है शक्ति की अपेक्षा। संस्कृत भाषा में नारी के लिये पुरंधि शब्द का प्रयोग हुआ। पुर या नगर की रक्षा करने वाली। युद्ध के समय बाहरी शत्रुओं से पुरुष, तो आँतरिक से महिलाएं

निपटती थीं। स्त्रियों की शक्ति इतनी अमोघ मानी जाती थी कि कई बार पुरुष को उससे विवाह से पूर्व कई परीक्षाओं में पास होकर बल प्रदर्शित करना पड़ता था। जैसे द्रोपदी के लिये मत्स भेदन (मछली) व सीता के लिये धनुष तोड़ना रखा गया था। देवताओं से कहीं अधिक देवियाँ शस्त्रधारी देखने में आती हैं। देवियों को अनगिनत हाथों से सुसज्जित बनाया गया है जो अधिक गुणों व शक्तियों का ही सूचक हैं। हाँ जीवन में विकास के लिये दूसरों से सहायता लेना बुरा नहीं, कमज़ोरी नहीं। मर्यादा पूर्वक चलना यह तो बल ही का सूचक है।

भारत वैराग्यमय,संयम प्रधान देश है अतः दुर्बल पुरुष को इस आत्म बल के आदर्श में ढलने व इस तक पहुंचने के लिये माध्यम सदा नारी ही बनी। फिर हम उसे अबला कैसे कहें। अगर नर व नारी को एक ही तराज़ू पर तोला जाय तो दोनों समान हैं। अगर तोलने की तुला ही भिन्न-भिन्न रखी जाय तो स्थिति बिना पहिये की गाड़ी की तरह जहाँ की तहाँ खड़ी रहेगी।

अगर नारी के परिवर्तन या नारी द्वारा विश्व परिवर्तन की आवश्यकता कोई न समझे तो नारी का विद्रोह दिशाहीन आँधी की तरह वेग पकड़ता जायेगा और तब विध्वंस, विनाश के अतिरिक्त समाज उससे कुछ ओर न पा सकेगा। वह स्थिति नारी के आगे झुकने की तुलना से कई गुना अधिक दुखकर व अपमानजनक होगी और स्थिति की स्थिरता मृत्यु का श्रृंगार हो सकती है जीवन का नहीं।

वास्तव में नारी रिक्ता होकर भी पूर्ण है। देती रहने पर भी भरपूर है। ऋषियों ने पहले "मातृ देवो भव" कहकर वन्दना की है, उसके बाद "पितृ देवो भव" का केवल स्मरण किया है। नारी स्वभाव में पुरुष की अपेक्षा क्रूरता का अभाव होने कारण वह सृजनात्मक (निर्माण) शक्ति से सम्पन्न है।

एक सोते हुए, कम बुद्धि वाले मित्र को दूसरे वैज्ञानिक मित्र ने कान में कहा कि तुम बहुत बड़े वैज्ञानिक बनोगे। उस सूक्ष्म भावना में इतनी दृढ़ता थी कि जब वह साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति उठा, उसने अपनी बुद्धि में बहुत बड़ा परिवर्तन पाया कि उसे वैज्ञानिक बनने का विचार आने लगा और सच वह आगे चलकर बहुत बड़ा बना। पहले वैज्ञानिक ने उसे बहुत बाद में बताया कि सोने की अवस्था के समय मैं ने तुम्हारे ऊपर एक प्रयोग किया और वह प्रयोग सफ़ल हुआ। इसी प्रकार बच्चे को सोने के पहले स्नेह की लोरियाँ सुनाने वाली और सोने के बाद उससे महानता की बातें करने वाली तथा वीरता की कहानियाँ सुनाने वाली माँ सच ही इस विशाल सृष्टि की परिवर्तक ही तो है। इमर्सन ने भी कहा था कि "प्रतिभाशाली तथा पावन हृदय वाले व्यक्ति जिन विचारों को संसार में फैलाते हैं उनसे ही संसार में श्रेष्ठ परिवर्तन आता है।"

कहा जाता है कि ब्रह्मा को संकल्प उठा और उन्होंने सृष्टि रच डाली अर्थात् संकल्प से ही सृष्टि रची गयी। इसी प्रकार प्राचीन काल की प्रसिद्ध नारी मदालसा ने दृढ़ संकल्प लिया "जो बच्चा मेरा दूध पी लेगा वह किसी दूसरी माँ की गोदी में नहीं खेलेगा। अर्थात उसका पुर्नजन्म नहीं होगा। वह जन्म मरण के चक्र से छुटकारा पा लेगा" और इस संकल्प से उसके सभी पुत्र ब्रह्मज्ञानी हुए। तो अगर आज की माताएं भी संकल्प दृढ़ कर लें कि हमें दुनिया को श्रेष्ठ बनाना है तो एक दिन अवश्य आवेगा जब ऐसा परिवर्तन हम इसी जन्म में इन्हीं आँखों द्वारा देखेंगे। ब्रह्मा रचयिता के समान दृढ़ संकल्प-शक्ति माताओं बहनों में मौजूद है जिसका उदाहरण है मदालसा।

नारी, समाज की निर्माता के साथ-साथ संस्कृति की रक्षक भी है। संस्कृति हमारी और देश की महानतम् पूँजी है। यही संस्कृति मानव के उछृंखल मन को चरित्र की डोरी में बाँधे रहती है। इतिहास के प्रगतिकाल में गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा, अनुसुइया जैसी महान नारियाँ थीं जो अपनी विद्वता एवं योग्यता में पुरुषों से बहुत आगे थीं।

गाँधी जी शायद ही महात्मा गाँधी बन पाते यदि

कस्तूरबा का योगदान उन्हें समान रूप से न मिला होता। इसलिये गाँधी जी ने कहा था "मैं चाहता हूं कि भारत की स्त्रियाँ अपनी आत्म-शक्ति का भाव रखकर सामने आ जायें क्योंकि इसके आगे नारियों के हाथ में समाज का अंकुश आने वाला है। उसके लिये नारियों को ही तैयार होना पड़ेगा। ऐसे समय अपने दैवी गुणों के साथ, संयम,शीलता के साथ मातृ शक्ति सामने आती है तो श्रेष्ठ राज्य स्थापन कर सकती है। क्योंकि मातृ शक्ति आध्यात्म स्वरूप है।"

पुरुष वर्ग का प्रश्न उठ सकता है कि क्या केवल माताएँ बहनें ही विश्व परिवर्तन की आधार शिला व क्षितिज (आकाश) दोनों हैं लेकिन वास्तव में हम सभी आत्मारूप हैं जो शब्द स्त्रीलिंग बोध कराता है। वैसे भी केवल परमात्मा को पुरुष माना गया है, तुलना में आत्मा को नारी से संबोधित किया है। तो हम सभी आत्माएं विश्व नव निर्माण की नींव हैं। जैसे एक भवन बनाने में नक्शा बनाने वाले की भी आवश्यकता है तो ईंट पत्थर इकट्ठे करने वाले की भी, तो ईंट पत्थर को जोड़कर दीवार बनाने वाले की भी। किसी की भी निरर्थकता सिद्ध नहीं कर सकते।

वर्तमान समय परमपिता परमात्मा द्वारा ऐसे ही संयुक्त प्रयत्न से श्रेष्ठ युग तो क्या श्रेष्ठ कल्प का नव निर्माण हो रहा है श्रेष्ठ संकल्प द्वारा।

—:०:—

हमारी सेवाएँ

लेखिका : ब्रह्माकुमारी शबनम, ग्वालियर

नहीं सीखा है, जो आपने, वही सिखाना चाहते हैं।
नहीं देखा है जो आपने, वही दिखाना चाहते हैं।१।
नहीं सुना है, जो भी आपने वही सुनाना चाहते हैं।
नहीं माना है जो आपने वही मनवाना चाहते हैं।२।
नहीं बोल सकें आप जो वही बुलवाना चाहते हैं।
नहीं भूल सकें आप जो वहीं भुलाना चाहते हैं।३।
नहीं अनुभव किया हैजिसका,अनुभव कराना चाहते हैं।
नहीं किया है जो भी आपने वही कराना चाहते हैं।४।
नहीं खाया है जो आपने वही खिलाना चाहते हैं।
नहीं दिया है जो आपने वही दिलाना चाहते हैं।५।
नहीं पिया है जो आपने, वही पिलाना चाहते हैं।
नहीं खेला जो खेल आपने वही खिलाना चाहते हैं।६।
नहीं गये हैं जहाँ आप हम वहीं ले जाना चाहते हैं।
नहीं झूले आप जिस झूले में उस झूले में झुलाना चाहते हैं।७।
नहीं जानते आप जिसको वही बतलाना चाहते हैं।
नहीं देवता आप बन पाये हम बनवाना चहाते हैं।८।
नहीं आपके पास जो, वही दिलाना चाहते हैं।
नहीं मिला परमात्मा तुमको इसे मिलाना चाहते हैं।

नहीं चाहते बदले में हम
कुछ सेवा, चाह ही चाहते हैं।

निष्काम सेवाधारी हैं हम।
शिवशक्तियाँ कहलाते हैं।

विदेश समाचार

शान्ति दूत दीदी मनमोहनी जी की विदेश यात्रा

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की सहप्रशासिका ब्रह्माकुमारी मनमोहनीजी सिंगापुर, जापान, हांगकांग आदि देशों में १५ दिन की ईश्वरीय सेवा करने के पश्चात माउंट आबू वापिस पहुँच चुकी हैं।

दीदी मनमोहनी जी २२ सितम्बर को बम्बई से सिंगापुर के लिए रवाना हुईं। लन्दन सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज ब्र० कु० जयन्ती बहन भी आस्ट्रेलिया,न्यूजीलैण्ड आदि देशों में ईश्वरीय सेवा करने के पश्चात् सिंगापुर पहुँची। सिंगापुर के हिन्दू सेन्टर के प्रेज़ीडेन्ट के निमन्त्रण पर हिन्दू हाल में विश्व शान्ति पर प्रवचन चला, जिसके द्वारा हिन्दू मुस्लिम, पारसी, चाइनीज़ लोगों ने लाभ उठाया। २४ ता० शाम को विभिन्न धर्मों के नेताओं के लिए आयोजित स्नेह मिलन में भाग लिया। इस अवसर पर सिक्ख, हिन्दू, बौद्ध धर्मों के प्रतिनिधियों ने विश्व शान्ति पर विचार विमर्श किया। २५ ता० जापान पहुँचे, यहाँ पर आपने अन्तर्राष्ट्रीय विश्व परिवर्तन कानफ्रेंस में भाग लिया। २७ ता० को होरीजन सेन्टर के डायरेक्टर डा० मोडा के निमन्त्रण पर ब्र० कु० जयन्ती ने कर्म और पुनर्जन्म पर प्रवचन किया। डा० मोडा इस कार्यक्रम से बहुत ही प्रभावित हुए और उन्होंने स्वयं ही दीदी जी से मिलने की इच्छा प्रकट की। जब आप राजयोगिनी मनमोहनी जी से मिले तो उन्होंने यह महसूस किया कि आन्तरिक कमज़ोरियों को दूर करने के लिए राजयोग अभ्यास अति आवश्यक है और उन्होंने राजयोग अभ्यास उसी समय से करना आरम्भ किया। उसके साथ-साथ जापान के एम्बेसडर से भी व्यक्तिगत मुलाकात हुई, वार्तालाप के दौरान उन्होंने बताया कि यह देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है कि विदेशी भाई बहनें इस ज्ञान और योग की शिक्षा को लेकर अन्य आत्माओं को भी लाभ पहुँचा रहे हैं। इससे सिद्ध होता है कि यह ज्ञान और योग युनिवर्सल है। ३० ता० को दीदी जी हांगकांग पहुँची। आपके वहाँ पहुँचने से पहले रेडियो और समाचार पत्रों के द्वारा सर्व कार्यक्रमों की सूचना प्रसारित की गई थी। परिणामस्वरूप बहुत से दर्शनाभिलाषी भाई बहन आपसे मिलने के लिए आये और कईयों ने आपकी योग की शक्ति के द्वारा विभिन्न अनुभव प्राप्त किये। प्रतिदिन ८ बजे से ६-३० बजे तक आम जनता के लिए प्रवचन और योग अभ्यास के कार्यक्रम चले। इन प्रवचनों के द्वारा भारतीय, चाइनीज़, और अमेरिकन लोगों ने विशेष लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त ७ मिनट के लिए दीदी जी का हिन्दी भाषा में "दशहरा, और जयन्ती बहन का 'दीवाली' पर इंगलिश में रेडियो इन्टरव्यू रिकार्ड किया जो दशहरे और दीवाली पर प्रसारित होंगे। हांगकांग में भारतीय हाई कमिश्नर से व्यक्तिगत मुलाकात हुई और उन्होंने इस विद्यालय के मुख्यालय माउण्ट आबू में आने की इच्छा प्रकट की। राजयोगिनी शान्ति दूत दीदी मनमोहनी जी जहाँ-जहाँ गये वहाँ के लोगों ने शान्ति के प्रकम्पनों की अनुभूति की। ५ अक्टूबर दीदी मनमोहिनी जी और जयन्ती बहन वापिस भारत पहुँची।

दादी जानकी द्वारा राष्ट्र संघ को सम्बोधन—न्यूयार्क स्थित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय राजयोग केन्द्र को संयुक्त राष्ट्र संघ के गैर सरकारी संस्थाओं के संगठन की ओर से वार्षिक "शक्ति-विकास तथा मानव का भविष्य" सम्मेलन पर निमन्त्रण मिला। दादी जानकी जी जो कि विदेशों में स्थित सेवाकेन्द्रों की इंचार्ज हैं ने उसमें भाग लिया।

उन्होंने सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधियों को अपने वक्तव्य के आरम्भ में बताया कि "जो शक्ति हमारे पास कम है उसके विषय में नहीं परन्तु जो शक्ति हमारे पास है उस पर सन्देश देने आई हूँ" आध्यात्मिक शक्ति के बारे में उनका इशारा था। वह कोई ज़मीन खोदने से या प्राकृतिक द्रव्य पर जीत पाने से नहीं परन्तु प्रकृति से पार जाने से तथा अपनी पुरानी प्रकृति (संस्कार, स्वभाव) पर विजय पाने से प्राप्त हो सकती है। उन्होंने भ्रातृ-भावना को अपनाने और स्वयं को शान्त स्वरूप बनाने की प्रेरणा दी, दूसरे में अवगुणों को देखने की बजाए, शान्ति की किरणें बिखेरते हुए स्वयं को विकारों का बहिष्कार करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि "ऐसा युग आने वाला है जहाँ सर्व प्राप्तियाँ सदा सर्व को प्राप्त होंगी। ऐसी दुनिया में हम तब जा सकते हैं जब वहाँ ले जाने वाले नेता हों। इस सम्मेलन में आप सब नेता आए हैं। यदि आप वह पवित्र शक्ति अपने में उत्पन्न कर ले तब विश्व आपका अनुयायी बनेगा। आप यह तो जानते हैं कि परमात्मा शान्ति, प्रेम, आनन्द के सागर हैं, केवल इन गुणों को अपना बनाना है और अब ही समय है ऐसा बनने का। ऐसा बनना ही शक्ति प्राप्त करना है। अब आप क्या करेंगे। बहुत काल से विश्व जो जंगल बन गया है आइये, इसे बागीचा बनाएं।"

ब्र० कु० जानकी जी को संयुक्त राष्ट्र संघ की रीक्रियेशन कौन्सिल मिस्टिक्स राऊँड टेबल ग्रुप से "आध्यात्मिक शक्ति संकट" पर बोलने का निमन्त्रण मिला। उन्होंने तथा ब्र० कु० जयन्ति बहन ने धार्मिक नेताओं के शिखर सम्मेलन में भी भिन्न-भिन्न नेताओं से भेंट की। इससे पूर्व भारत के स्वतन्त्रता दिवस पर एक झाँकी निकाली गई जिसको न्यूयार्क की बहुत बड़ी संख्या में जनता ने देखा। इस झाँकी को टी० वी० पर भी दिखाया गया, इसका समाचार न्यूयार्क टाइम्स और 'दी डेली न्युज़' में भी छपा। जिस कारण ब्रह्माकुमारियों के विषय में लोगों को विस्तृत जानकारी मिली। दादी जानकी ने "मानव का विकास" सेमिनार में भी प्रवचन किया तथा एन०जी० ओ० के कई वक्ताओं के साथ ब्रह्माभोजन किया।

दादी जानकी जी तथा ब्र० कु० मोहिनी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव भ्राता कर्ट वेलढीम से भी भेंट की। न्यूयार्क में दादी जानकी को समाचार पत्रों ने काफ़ी महत्व दिया। ५ मिनट के लिए उन्हें टेलीवीज़न पर बोलने का प्रोग्राम मिला। यह प्रोग्राम संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के ४३ राज्यों में दिखाया गया। "ओवरसीज़ टाइम्ज़", "लीज़र न्युज़", "इन्डिया अबराड", "न्यु इन्डिया", "ब्रुकलिन कालेज न्युज़पेपर" तथा "न्यु हैम्पशायर" के पत्रकारों ने दादी जानकी से भेंट वार्ता की।

"श्री लंका में ईश्वरीय सेवा"

मद्रास सेवा केन्द्र की ओर से लगभग २ मास से श्रीलंका (सीलान) में ईश्वरीय सेवा का कार्य बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा है। सीलान के गांधीयाम आश्रम के निमन्त्रण पर विशेष हिन्दू धर्म की विशेषतायें और भारत के आदि सनातन देवी देवता धर्म पर ब्रह्माकुमारी बहनों ने प्रवचन किये। इस आश्रम के प्रेजीडेन्ट के निमन्त्रण पर ब्रह्माकुमारी बहन भाईयों ने इसकी विभिन्न शाखाओं का दौरा किया और उन्हें ईश्वरीय ज्ञान से अवगत कराया। किलीनोची ग्राम के ६० टीचर्स, गांधीयाम की १०८ कुमारियां, गुरुकुल के १६० बच्चों को त्रिद्विसीय राजयोग के द्वारा लाभान्वित किया गया। जाफना, ट्रिनकोमाल के समाज सुधार सेन्टर के निमन्त्रण पर गांधीयाम टीचर्स मीटिंग में प्रवचन और शिविर के कार्यक्रम से वहाँ से २२० किलोमीटर दूर बरीकोला के हिन्दू एसोशियेसन में आयोजित कार्यक्रम द्वारा ३०० लोगों ने लाभ उठाया। सीलान रेडियो से दो बार तामिल भाषा में ब्रह्माकुमारी शान्ता जी के इन्टरव्यु प्रसारित हुए जिसमें ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का परिचय और गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया। वहां के लोगों ने स्थाई सेवा केन्द्र खोलने की मांग की है।

□□□□

चिट्ठी मिली

प्रश्न—हर आये दिन हम समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में यह समाचार पढ़ते रहते हैं कि अमुक स्थान पर कुछ अवशेष मिले जो कि लाखों वर्ष पुराने हैं। परन्तु प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विद्यालय की पत्रिकाओं में तथा साहित्य में हम पढ़ते हैं कि कल्प की कुल आयु ही ५,००० वर्ष है। क्या आप बतायेंगे कि इतना अन्तर क्यों है ?

उत्तर—पुरातत्त्व वैज्ञानिकों को जो अवशेष मिलते हैं, उनकी आयु वे प्राय: जिस विधि से जानने का यत्न करते हैं उस विधि को वे'कार्बन-१४प्रणाली' कहते हैं। इस प्रणाली का आविष्कार 'लिब्बी' नामक वैज्ञानिक ने किया था। लिब्बी की मान्यता यह है कि ऊपर नभ मण्डल से बहुत शक्तिशाली रश्मियाँ (Cosmic Rays) आती रहती हैं। जब यह हमारे अन्तरिक्ष में पहुँचती हैं तो हमारे वायुमण्डल में जो नाइट्रोजन है, उसे वह कार्बन-१४ में परिवर्तित कर देती हैं। यह कार्बन सक्रिय (Radio-active) होता है अर्थात रेडियम की भाँति इसमें से भी गेमा किरण (Gama rays)निकलती रहती हैं। इस सक्रिय कार्बन से भी अन्य कार्बन की भाँति वायुमण्डल के आक्सीजन के साथ मिलकर कार्बन डाइ-आक्साइड बन जाती है। इसे जीव प्राणी और पेड़-पौधे अपने श्वास में लेते हैं। जब तक वे जीवित रहते हैं तब तक वे जितनी कार्बन डाइ-आक्साइड प्रति सेकण्ड लेते हैं, उतनी छोड़ते भी हैं। परन्तु इनके मर जाने के बाद कार्बन डाइ-आक्साइड लेना तो बन्द हो जाता है परन्तु वे उसे छोड़ते रहते हैं। लिब्बी ने उनके छोड़ने की गति को मालूम किया है। उसके आधार पर वैज्ञानिक यह तथ्य मालूम करते हैं कि इस मनुष्य, पशु या पौधे को नष्ट हुए कितना समय हुआ है।

परन्तु यहविधि कई ग़लत मान्यताओं पर आधारित होने के कारण बहुत बड़ी आयु बताती है। इन ग़लत मान्यताओं में एक तो यह है कि लिब्बी मानता है कि वातावरण में नभमण्डल से आनेवाली रश्मियों (Cosmic Rays) की तथा कार्बन डाइ-आक्साइड की मात्रा सदा एक-सी ही रही है यद्यपि इसके साथ-साथ वह यह मानता भी है कि कारखानों और मोटर गाड़ियों आदि के प्रचलन के बाद वातावरण में अन्तर भी पड़ा है। यह मानने पर भी वह अवशेषों की आयु आंकने के लिए वातावरण को सदा एक-सा ही मानकर चलता है। दूसरे वैज्ञानिक कहते हैं कि २५०० वर्ष से पहले के समय में कॉस्मिक रेज़ की मात्रा कम थी और पेड़-पौधे अधिक थे और कि ५००० वर्ष पहले बहुत बड़ी बाढ़ आई थी अर्थात एक विश्व-प्लावन की सी स्थिति थी तथा आणविक अस्त्रों का विस्फोट हुआ था जिससे वातावरण में, इन दो समयों पर काफ़ी परिवर्तन हुआ। इसको न जानने तथा इसका हिसाब लिब्बी के पास न होने के कारण ही अवशेषों के मूल्यांकन में लाखों वर्षों का अन्तर पड़ता है। इस अन्तर की ग़लती गणित द्वारा सिद्ध की जा सकती है।

प्रश्न—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के लोग श्वेत वस्त्र क्यों पहनते हैं ?

उत्तर—'श्वेत' पवित्रता का प्रतीक है। शास्त्र-वादी लोग सरस्वती और ब्रह्मा को भी श्वेत वस्त्र-धारी चित्रित करते हैं। श्वेत सादगी का भी प्रतीक है। अत: ईश्वरीय विद्या तथा राजयोग द्वारा पवित्र बनने तथा सादा जीवन व्यतीत करने का संकल्प एवं पुरुषार्थ करने वालों का परिचायक है।

—:o:—

विचार-प्रवाह

लेखक :—ब्र० कु० आत्म प्रकाश, कृष्णा नगर (देहली)

अनवर सदात की हत्या के शोक में न केवल मिश्र देश के वासियों ने मस्जिदों में निमाज़ अदा कर के अल्लाह से यह दुआ की कि वह मृतक की आत्मा को शान्ति दे बल्कि इस्राइल देश में यहूदियों ने भी अपने धर्म-स्थानों पर इकट्ठे हो कर भगवान, जिसे वे 'जेहोवा' कहते हैं, से सदात की आत्मा को शान्ति देने की प्रार्थना की । परन्तु जब, मिश्र देश के वासी अपने प्यारे प्रधान की मृत्यु पर शोक प्रकट करने तथा प्रभु से उसे शान्ति देने की याचना करने के लिए मस्जिदों में इकट्ठे हुए तो मस्जिद में स्थानाभाव के कारण बाहर खड़े हुए लोगों को वहाँ की पुलिस ने भीतर चले जाने के लिए आज्ञा दी । इसी बात को लेकर जनता और पुलिस में कहा-सुनी जो हुई, उसके परिणाम स्वरूप पुलिस ने गोली चलाकर शान्ति के लिए प्रार्थना करने वालों को भी सदात की राह का राही बना दिया और अब उनके रिश्तेदारों को उनकी शान्ति के लिए अल्लाह से प्रार्थना करने पर मजबूर कर दिया । दूसरी ओर इस्राइल में भी जब लोग सदात की शान्ति के लिए धर्म-स्थानों में इकट्ठे हुए तो वहाँ की सरकार ने धर्म-स्थानों की रक्षा के लिए मिलेट्री का इस डर से कड़ा पहरा लगा दिया कि कहीं फलस्तीनी मुक्ति दल के छापामार इस अवसर का लाभ लेकर बम्बारी न कर दें ।

देखिये, अब तो शान्ति के लिए प्रार्थना करना भी ख़तरनाक हो गया है । सदात मिश्र और इस्राइल के बीच स्थायी शान्ति के लिए प्रयत्न करते रहते थे परन्तु वे स्वयं ही गोली का निशाना बना दिये गये । फिर लोग उनकी शान्ति के लिए इकट्ठे हुए तो उनमें से भी कुछेक शान्ति की बजाय गोली को प्राप्त करते गये और अन्य भय के नीचे भगवान से प्रार्थना में लगे रहे ! भला कैसी है यह शान्ति !

फिर, विचारणीय बात यह है कि परमात्मा तो हैं शान्ति के दाता और दयालु तथा कृपालु । तब, क्या उन्हें शान्ति के लिए सिफ़ारिश करने की ज़रूरत है ? क्या उनकी यादाश्त इतनी कमज़ोर है कि लोगों द्वारा याद दिलाये बिना वे शान्ति देना भूल जाते हैं ? जब कि यह सत्यता लोक-मान्य है कि मनुष्य को उसके कर्म के फलस्वरूप ही सुख और दुःख तथा शान्ति और अशान्ति मिलती है तो क्या लोगों को प्रार्थना करने से, कर्म फल के नियम को तोड़कर भी किसी को शान्ति दे दी जाती है ? यदि किसी ने अपने जीवन-काल में अच्छे कर्म किये हैं तो उसे अवश्य ही शान्ति मिलेगी और यदि किसी ने बुरे कर्म किये हैं तब उसके लिए एक तो शान्ति की सिफ़ारिश करना भी अजीब सा लगता है और, दूसरे उसे कोई शान्ति देगा भी कैसे जब उसके अपने मन में भरे हुए दुर्भाव ही उसे अशान्त किये रहते हैं ?

एक प्रश्न यह भी उठता है कि मृत्यु के बाद आत्मा कहाँ जाती है ? यदि आत्मा एक शरीर छोड़-कर दूसरा शरीर धारण करती है जैसे कि श्रीमद्-भगवत् गीता में कहा गया है, तब तो वह शरीर ही इसलिए लेती है कि वह अपने कर्म का फल भोगे और यदि वह किसी दूसरे शरीर में नहीं जाती, जैसे कि कई यहूदी तथा मुसलमानादि मानते हैं तो फिर वह कहाँ जाती है ? क्या वह परमात्मा के पास जाती है ? यदि कहा जाये कि, हाँ, वह परमात्मा के पास जाती है, तब तो उसकी शान्ति के लिए प्रार्थना करने की बिल्कुल ही ज़रूरत नहीं है क्योंकि नदी के तट पर जाने वाले को, पानी और बर्फ़ के निकट जाने वाले को शीतलता मिलती ही है । यदि वह परमात्मा के पास नहीं जाती तो वह शान्ति किससे लेगी ?

अन्यश्च, लोग स्वयं ही तो कहते हैं कि परमात्मा

से मिलना कठिन है। प्रभु-प्राप्ति के लिये ही तो वे साधना करते हैं। तब हमारे मन में एक सुदृढ़ मत तो होना ही चाहिए कि प्रभु-प्राप्ति साधना से एवं पुरुषार्थ से होगी या मरने से ? यदि मरने पर प्रभु-मिलन होता है तब तो साधना करना ही बेकार है और यदि साधना ही से प्रभु-मिलन होता है और साधना के बिना मरे व्यक्ति को प्रभु से कहीं मिलन ही नहीं होता तो प्रार्थना करने पर भी उसे शान्ति कैसे मिलेगी ?

इस सब पर विचार करने पर निष्कर्ष यह निकलता है कि जब परमात्मा ही शान्ति का दाता है और प्रभु-प्राप्ति से शान्ति मिलती है और प्रभु-प्राप्ति साधना से होती है तो जीवन-काल में ही साधना क्यों न की जाय और कर्मों को श्रेष्ठ क्यों न बनाया जाय ?

अत: जो बन्धु-बन्धव, मित्रजन-स्वजन, हितैषी और शुभाभिलाषी किसी आत्मा के लिए शान्ति की कामना करते हैं तो उनका कर्त्तव्य यह है कि वे उस व्यक्ति को उसके जीवन-काल में ही साधना के लिए सलाह दे। वे उसे बतायें कि वह शान्ति के दाता परमात्मा से सम्पर्क अथवा सम्बन्ध जोड़े। जो इस प्रकार का सम्बन्ध जोड़ता है, वही शान्ति को प्राप्त करता है। इस प्रकार का सम्बन्ध जोड़ने की क्रिया को ही सहजयोग कहा जाता है। योगाभ्यास मनुष्यता को इस जीवन में भी और बाद में भी शान्ति देने वाला है। योग (अर्थात परमात्मा से आत्मा के सम्पर्क एवं सम्बन्ध) के बिना शान्ति के दाता परमात्मा से शांति प्राप्त ही नहीं की जा सकती। अत: शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करने की बजाय मनुष्यात्मा से ही प्रार्थना करनी चाहिए कि वह जीवन-काल में ही परमात्मा से नाता जोड़े। परमात्मा से स्नेह का नाता जोड़े बिना वह उसके पास जायेगी किस सम्बन्ध से और पायेगी क्या ? यह स्नेह का सम्बन्ध ही तो सहज योग है। परन्तु सम्बन्ध तो तभी जुटेगा जब उसका हमें परिचय हो जिससे हम सम्बन्ध जोड़ना चाहते हैं। परिचय के बिना सम्बन्ध और स्नेह नहीं और उसके बिना प्राप्ति नहीं; तब ऐसे में केवल प्रार्थना करने का क्या प्रयोजन ? परमात्मा तो परम पवित्र हैं, उसके साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए अर्थात् योग-युक्त होने के लिये हमें भी पवित्र बनना होगा। अत: 'पवित्र बनो और योगी बनो' के नीति वचन को आचरण में लाये बिना शान्ति कहाँ ? यों शान्ति तो मनुष्य का 'स्वधर्म' है परन्तु मनुष्य ने स्वयं ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि को मन में बसाकर स्वयं को अशान्त कर रखा है। अब जब उसके संस्कारों में पवित्रता के रूप में क्रान्ति हो, तभी सदा के लिये शान्ति हो। शान्ति की प्राप्ति 'शान्ति पाठ' करने से या प्रार्थना करने से नहीं बल्कि अशान्ति पैदा करने वाली आदतों को छोड़ने से होगी। प्रार्थना करने के लिये कोई मक्का की ओर मुँह मोड़ता है, कोई येरुशलम की ओर; कोई अमृतसर की ओर तो कोई तरनतारन की ओर; कोई पूर्व की ओर तो कोई आकाश की ओर परन्तु यदि मनुष्य मन को प्रभु की ओर मोड़ दे और विकारों को छोड़ दे तो शान्ति उसे छोड़ ही नहीं सकती। प्रार्थना करते समय कोई नतमस्तक होता है तो कोई घुटने टेकता है, कोई हाथ जोड़ता है तो कोई दोनों हथेलियों की थाली बना लेता है, परन्तु यदि मनुष्य माया के आगे नतमस्तक होना घुटने टेकना, हाथ जोड़ना, या झोली तानना छोड़ दे और प्रभु से नेह का नाता जोड़ दे तो उस योगी आत्मा को सच्ची शान्ति का सार सतत प्राप्त होता ही रहेगा।

—:o:—

"संकटों में छिपा आपका उज्जवल भविष्य"

ब्रह्माकुमारी शीला, काठमान्डू (नेपाल)

आज हर इन्सान अपनी जिन्दगी में अमनचैन और सुख शान्ति की तलाश कर रहा है। जिसको हासिल करने के लिए अनेक प्रयत्न भी करता है मगर फिर भी दिन प्रति दिन दुःख अशान्ति, पापाचार, भ्रष्टाचार बढ़ता ही जाता है। चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है। सच बात तो यह है कि हर इन्सान का चरित्र दिन प्रति दिन गिरता ही जाता है। इस समय सारा संसार विकारों की आग में जल रहा है। हर प्राणी इन पाँच शैतानों की पकड़ में आ चुका है। और मानव का चलना बड़ा मुश्किल हो गया है क्योंकि वह अपने जीवन रूपी रास्ते को मुश्किल समझने लग पड़ा है और थककर हार कर बैठ गया है।

पथ कितना भी लम्बा हो, सैकड़ों बाधाएं आयें मगर कर्मवीर कभी अपने निश्चित लक्ष्य से विचलित नहीं हुए। एक नन्हा सा दीप भयंकर आँधी और तूफान की चिन्ता किये बिना अंधकार से निरन्तर झूझता ही रहता है। यह जीवन भी एक दीप है जिसे जगाने के लिए अनेक परिस्थितियों का सामना करके ही अपने वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करना है। उठो और वर्तमान युग के भीषण वातावरण में धैर्य और साहस को तोड़ देने वाली इस विकट परिस्थितियों के सम्मुख परम पिता परमात्मा द्वारा मिल रहे आत्म ज्ञान की असीम शक्ति से स्वयं को चट्टान सदृश्य बना लो। इस समय संसार की समस्त आत्मायें मोह माया के जाल में फंसकर दुःखी और अशान्त हो चुकी हैं। जैसे एक मकड़ी अपने मुख से स्वयं ही जाला निकालती है और स्वयं ही उसमें फंस जाती है, वैसे यह मानव भी इतना ही निर्बल और अन्जान बन गया है कि इसे बिलकुल ही ज्ञान नहीं कि कैसे मैं माया के बन्धनों को तोड़कर इससे मुक्त हो सकूँ।

इस संसार की वर्तमान स्थिति को देखते हुए आज प्रायः हरेक मानव के मन में यह शंका उठती है कि विश्व शान्ति के लिए जो पुरुषार्थ करते हैं वह कब सफ़ल होगा? हमारा भविष्य उज्जवल कैसे होगा? मगर हिसाब, यूँ हुआ, ज्यों ज्यों दवाई की रोग बढ़ता ही गया। क्योंकि मानव समझता है कि भौतिक उन्नति से शायद भविष्य ऊँचा बनेगा, भौतिक साधनों से यह संसार नया अर्थात सतयुगी बन जाएगा। मगर नहीं, जिस भवन की नींव नहीं या कमज़ोर है वह कब तक खड़ा रह सकेगा। अब तो हमें अपने जीवन रूपी भवन को ऊंचा बनाने के लिए पवित्रता की नींव मज़बूत बनानी है। तभी नये संसार का आगमन हो सकेगा। हमें यह याद रखना चाहिए कि भगवान् सदा हमारी रक्षा कर रहा है उसकी छत्रछाया में इस तपते जगत की आँच भी नहीं लग सकती। पहले अपने आप में यह निश्चय करना है कि मैं देह नहीं बल्कि इस देह अर्थात शरीर में निवास करने वाली एक चेतन आत्मा हूँ। परमपिता परमात्मा की सन्तान हूँ। परमात्मा मेरा मददगार साथी है वह कभी भी हमें अकेले नहीं छोड़ेगा उसकी मदद से ही अनेक आत्माओं के दीपक जगाने हैं। हमारी टूटी आशाओं को बंधाने वाला वह बाप हमारे साथ है। जब यह हमारी बुद्धि में रहेगा तो हम अपने साथ साथ अनेक आत्माओं के जीवन को ऊँचा बना सकेंगे और भविष्य के लिए सुख शान्ति और पवित्रता से परिपूर्ण नया जीवन बना सकेंगे। भगवान का मानव के प्रति यह सन्देश है कि तुम **पवित्र बनो और योगी बनो**। पवित्रता में बहुत बड़ी शक्ति है। इससे तुम चाहो सो कर सकते हो! यह संसार अंधकारमय है इसमें चमकते हुए चेतन सितारे बनकर सारे जग को ज्ञान से रोशन करना है। नैनों रूपी खिड़कियों से शान्ति, आनन्द और प्रेम की किरणों रूपी गुलाब जल से सबका स्वागत करो। अन्तर्मुखता की गुफा में बैठकर बाह्यमुखता रूपी

दरवाजा बन्द करके एक परम पिता परमात्मा शिव की याद में मगन हो जाओ तो पाँच विकार रूपी चोर कभी भी दरवाजा तोड़कर अन्दर आने का साहस नहीं कर सकेंगे।

मनुष्य जीवन का लक्ष्य मुक्ति और जीवन मुक्ति की प्राप्ति करना है। मगर मानव इस संसार रूपी बगीचे में अनेक प्रकार की मृग तृष्णाओं से आकर्षित हो जाते हैं और रास्ते में ही भटक जाते हैं। **कोई देह के सम्बन्धियों के मोह ममता में फंसकर खट्टे अनार को चखने में आनन्द मानकर वहीं अटक जाते हैं। कोई मान शान को पाने के लिए उसे मीठी खजूर समझकर उस पर चढ़ने और खाने की खुशी में हो आयु व्यतीत कर देते हैं। कोई धन को अंगूरों की बेल की तरह मीठा मान कर उनसे तृप्त होने की कोशिश करता है और जीवन को एक ऐश अराम का अंग मानकर मुरझाये हुए फूल की तरह बढ़ता जाता है।** प्रकृति के प्रति आकर्षित हुए तथा मोह और आसक्ति के इन सूक्ष्म धागों में बंधे हुए ये भोले मानव पथ भ्रष्ट हो जाते हैं और अन्त में पश्चाताप करते हैं। उन्हें यह मालूम ही नहीं है कि अब हमारा जीवन खत्म होता जा रहा है और समय भी अन्त का आ गया है। आखिर हम अपने भविष्य को उज्जवल कब और कैसे बनायेंगे ?

इतिहास साक्षी है कि जिसने अपने तथा दूसरों के जीवन को ऊँचा उठाने का प्रयास किया या कुछ ज्ञान देकर नई राह दिखानी चाही उसके आगे अनेक परीक्षाएं आई। कई प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक कष्ट उठाने पड़े। कई तूफ़ानों का सामना करना पड़ा। लेकिन इस पतित संसार में विघ्नों का आना स्वाभाविक ही है। जो आत्मायें दूसरों को सत्यता का पाठ पढ़ाती हैं, जो ज्ञान और योग के मार्ग की राही बनती है उन्हें यह पहले ही सोच लेना चाहिए कि हमारे आगे विघ्न और तूफ़ान आयेंगे जरूर। उनके मन में यह प्रश्न नहीं उठना चाहिए कि विघ्न क्यों आते हैं ? विघ्न नहीं आने चाहिए। मगर उन्हें यह सोचना चाहिए कि इन विघ्नों को कैसे पार करें। हमें विघ्नों का डट कर सामना करना है और विजयी बनना है। यही हमारा लक्ष्य है। **कोई भी महान् कार्य करने के लिए विघ्नों का सामना तो करना ही होगा क्योंकि उसमें हमारा उज्जवल भविष्य** होता है। विघ्नों को देखकर अपने लक्ष्य को छोड़ न देना चाहिए। विघ्न तो हमारे सहायक हैं जो कि लक्ष्य पर पहुंचने के लिए और ही उत्साह भर देते हैं। विघ्न अस्थाई है। आज दुःख है तो कल सुख अवश्य ही होगा। हमें यह विघ्न कुछ सिखाकर चले जाते हैं। इसलिए रुको नहीं, **तूफानों के सामने चट्टान बनकर चलना सीखो।** तूफानों से लड़कर संघर्षात्मक जीवन जीना ही तो हमारा स्वधर्म है। इसलिए हमें निराश होने की जरूरत नहीं। भगवान ने आशाओं के दीपक पहले से ही हमारे लिए जला दिये हैं। जितने भी महान पुरुष हुए हैं विघ्नों व तूफानों ने ही उन्हें महान बनाया है। इसलिए तूफानों से खेलने में तुम्हें असीम आनन्द की प्राप्ति होगी। तुम्हारे जीवन रूपी नॉव को डुबाने की शक्ति किसी में भी नहीं है क्योंकि स्वयं सर्वशक्तिमान भगवान् शिव परमात्मा के हाथ में हमारी नैया की पतवार है। इतना प्रबल नाविक होते हुए भी हमें तूफ़ानों से भय ? "नहीं, नहीं", **सत्य की नॉव डोलेगी मगर डूबेगी नहीं।** तो याद रखो अब शीघ्र ही प्रत्यक्ष होने वाला आपके स्वर्णिम भविष्य का शंखनाद आपको स्पष्ट सुनाई देने वाला है, वह सतयुगी नया संसार इस भूमि पर साक्षात् देवताओं का स्वराज्य लेकर आ रहा है, जिसमें छुपा है आपका उज्जवल भविष्य।

—:o:—

नर्क की एडवरटाइज़मेंट

डा० बलदेवराज, मोगा

यह तो हम सब जानते हैं कि मरने के बाद धर्मराज के सामने पेशी होती है । वहां लोगों के नर्क व स्वर्ग में जाने का फैसला होता है । एक बार ऐसा हुआ कि धर्मराज ने रिश्वत लेनी आरम्भ कर दी, उसके इस काम से हाहाकार मच गया । मृत्युलोक के वासियों ने शिष्टमण्डल भगवान के पास भेजा, उस पर भगवान ने कहा कि यदि मैंने धर्मराज की जगह किसी और को रख लिया तो वह भी ज़रूर रिश्वत लेगा । तो पृथ्वी निवासियों ने सुझाव दिया कि आप वोट डालने का तरीका अपना लें । एकदिन में जितने लोग यहाँ धर्म राज पुरी में आएंगे वे सब एक दुसरे के लिए वोट डालेंगे कि कौन नर्क में जाएगा और कौन स्वर्ग में, आखिर इस प्रणाली को अपना लिया गया ।

इसी बीच एक नेता जी मरकर धर्मराज के पास पहुंचे । वे सदा अपनी राजनीति में मस्त रहते थे उन्हें नर्क और स्वर्ग के बारे में कुछ पता नहीं था । उन्होंने वोट डलवाने से पहले कहा मुझे नर्क और स्वर्ग दिखाया जाए, जो स्थान मुझे पसन्द आएगा मैं वहां जाने के लिए अपना चुनाव स्वीकार करूँगा । चुनाव अधिकारी सहमत हो गया, उसने एक विमान मंगवाया और नेता जी को स्वर्ग की ओर ले चला । स्वर्ग का दरवाज़ा खोलकर नेता जी ने अन्दर झांका तो देखा कि पन्द्रह बीस महात्मा लोग हाथ में माला लिए भगवान का नाम ले रहे हैं। मौसम बड़ा सुहावना है तथा शान्ति का वातावरण बना हुआ है । कोई एक दूसरे से बातचीत नहीं कर रहा है । नेताजी को यह अच्छा नहीं लगा, उन्होंने मुँह बनाकर अधिकारी को नर्क दिखाने को कहा ।

जब नेता जी ने नर्क का दरवाज़ा खोला तो देखा जगह-जगह लोग शराब पी रहे हैं, मौज उड़ा रहे हैं। सब लोग मस्त हैं और खूब रौनक लगी हुई है । नेता जी को नर्क पसन्द आया और वापिस आकर वे अपने प्रचार में लग गए और कहने लगे कि मुझे नर्क में जाने के लिए वोट दीजिए । फिर क्या था नेता जी को नर्क के लिए वोट पड़ गई और नेता जी को नर्क भेज दिया गया ।

वहां जाकर उन्होंने मद्यपान किया, खूब नाचे और जब वे थक गए तो उन्होंने नर्क के इन्कवायरी आफिस से आराम करने की जगह पूछी तो नेता जी को सीधा चलने को कहा गया, और उनकी आंखों पर पट्टी बांध दी गई । सीधा चलते हुए नेताजी बड़े जोर से एक गहरी खाई में गिर पड़े । गिरते ही उनकी बुरी तरह पिटाई होने लगी । नेता जी ने कहा यह कौन सी जगह है जो मुझे पीट रहे हो ? जबाब मिला कि यह नर्क है । नेता ने कहा यह नर्क कैसे हो सकता है । नर्क से तो मैं आ ही रहा हूं । वहां तो बहुत खुशियां तथा खाने पीने की मौज है । तो पीटते पीटते एक बोला, वह तो हमारा नर्क का एडवरटाइज़मेंट डिपार्टमेंट है । यदि हम ऐसी एडवरटाइज़मेंट न करें तो हमारे नर्क में आएगा ही कौन ? वास्तविक नर्क तो यह है ।

वास्तव में देखा जाए, आजकल के सभी लोगों का हाल नेता जी जैसा ही है । और आज का समय जो कलियुग का अन्तिम समय है, यही वास्तविक नर्क है । तथा आज का फैशन, नाच, गाने, व्यसन तथा अन्य मनोरंजन के साधन ही इस नर्क की एडवरटाइज़मेंट हैं । ज्ञान से हीन मानव आधुनिक युग की इस चकाचौंध को ही सर्व सुखों की खान समझकर इसे स्वर्ग समझ लेता है तथा इसके अन्दर फंस

भावनगर में स्नेह मिलन के अवसर पर ब्र. कु. गीता ईश्वरीय सन्देश दे रही हैं । उनकी दायें ओर ब्र. कु. भारती और युनिर्विसिटी के वाइस चान्सलर ध्रुप जी बैठे हैं

जाता है। पहले तो वह जवानी के नशे में चूर होकर विषय भोगों को भोगता हुआ सुख महसूस करता है। परन्तु जब भोगों को भोगते भोगते उनका शरीर भोगा जाता है और इन भोगों का गुलाम सा बन-कर रह जाता है, तब उसे थकान महसूस होती है। और फिर वह आराम करना चाहता है। परन्तु आराम की बजाए उसे कई प्रकार की समस्याएं घेर लेती हैं। कई प्रकार की बीमारियां, गृहस्थ का बोझ, रोग, शोक आदि के नीचे वह दब जाता है। तब उसे ऐसा लगता है कि वह दुःखों से घिर गया हो तथा दिन प्रति दिन कोई न कोई नई समस्या उसे चोटों की तरह लगती ही रहती है। तभी जाकर उसे अह-सास होता है कि मैं स्वर्ग में नहीं बल्कि नर्क में आ गया हूं। और नेताजी की तरह धोखा खा गया हूँ। परन्तु अब कुछ हो भी नहीं सकता इसलिए उसे जैसे तैसे नर्क में ही रहना पड़ता है।

और इसके विपरीत, स्वर्ग की प्राप्ति के लिए इस संगम समय पर परमपिता परमात्मा जो हमको सहज ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं और हमें पांच विकारों पर जीत प्राप्त कराकर पवित्र और योगी बना रहे हैं, जिससे ही हमें वास्तविक सुख एवं शान्ति की प्राप्ति हो सकती है और हम मनुष्य से देव-पद को पा सकते हैं, तो इस ईश्वरीय शिक्षा को नीरस सा समझकर प्रायः लोग इससे मुँह मोड़ लेते हैं। क्योंकि वे इस जीवन को त्यागमय और तपोमय समझते हैं। तथा ऐसे जीवन में उन्हें कोई आनन्द महसूस नहीं होता। इसे रूखा सा जीवन समझकर इसे छोड़ देते हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि यदि हम सदा के लिए सुखी एवं शान्तिमय जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो हमें आधुनिकता के आकर्षण को माया रूपी कंचन मृग समझ कर पीछा नहीं करना चाहिए बल्कि ज्ञान एवं योग को ही, जो कि स्वर्ग की प्राप्ति का एक मात्र द्वार है, अपनाना चाहिए। देखने में यह रुहानी जीवन बेशक उदासीन सा लगता है परन्तु सदाकाल की वास्त-विक सुख शान्ति एवं आनन्द से भरपूर जीवन यही है। यदि हम नेताजी की तरह आधुनिकता की मृग मरीचिका से प्रभावित होकर उसमें फंसेंगे तो निश्चय ही हमारा नेता जी वाला हाल होगा और नर्क के गड्ढे में पड़कर चोटें खाते रहेंगे तथा यदि हम पर-मात्मा द्वारा सिखाए गए ज्ञान और योग को अप-नाएंगे तो निश्चय ही हम सदा काल के लिये सुख शान्ति के भागी बनेंगे। ●

"अव्यक्त बापदादा के अनमोल वचन"

ब्रह्माकुमारी भाग, बटाला (पंजाब)

१. विशेषता यह दिखाओ कि मेहनत न लेकर मददगार बनेंगे।

२. माया के अधीन होने से ईश्वरीय अधिकार प्राप्त नहीं होता।

३. बाप द्वारा बताई विधि को न समझने से ही न अवस्था में वृद्धि होती है और न सर्वप्राप्तियों की सिद्धि होती है।

४. व्यर्थ से बचोगे तो समर्थ बनोगे।

५. अगर ईश्वरीय मर्यादा की लकीर से बाहर निकल जाते हो तो फ़कीर बन जाते हो।

६. माया का तिरस्कार करने से ही सतकार हो सकेगा।

७. जब तक Love और Law दोनों में समानता नहीं लाओगे तब तक कार्य में सफ़लता नहीं मिलेगी।

८. जो नालेजफुल होगा वह केयरफुल होगा। जो केयरफुल होगा वही चियरफुल होगा।

९. दूसरों पर Attention देने के बजाए अपनी Tention पर Attention दो।

१०. जहाँ बाप है वहाँ पाप नहीं हो सकता।

११. अगर विश्वनाटक के मुख्य एक्टर बनना चाहते हो तो ईश्वरीय सेवा में एक्टिव बनो और रूहानीयत द्वारा अटरेक्टिव बनो। ●

आर्य संस्कृति में 'शिव'

ब्र० कु० भावना, गाँधीनगर

'शिव' भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है, स्रष्टा है, द्रष्टा है, प्रेरक है, एवं परमात्मा स्वरूप हैं।

मिश्रित परम्परा

आर्य-संस्कृति अथवा भारतीय संस्कृति अपने विविध रंगों में रंगी हुई है। उसमें अनेक परंपराओं के रंग मिश्रित हैं, अनेक धाराओं से संयुक्त यह गंगा बन गई है। आर्य संस्कृति में प्रधानतः दो परंपराएँ हैं—वैदिक और श्रवण—विशेष ध्यान आकर्षित करती हैं।[1] वैदिक परंपरा ने स्तुति प्रार्थना तथा यज्ञादि क्रियाओं पर अधिक बल दिया, जबकि श्रवण परंपरा ने श्रम पर।

श्रवण संस्कृति की धुरी 'ब्रह्म' है। श्रवण संस्कृति कालक्रम में अनेक शाखा-प्रशाखाओं में विभक्त हो गई। जैन धर्म भी इसी श्रवण संस्कृति का एक भाग है। १८ वीं शती के जैन कवि जिनहर्ष ने इसी श्रवण संस्कृति की धुरी 'ब्रह्म' के संबंध में शिव शब्द का प्रयोग किया है।

'ज्ञान बिना शिव पंथ न पावै।
मन में भ्रमण दूरि कर, समता धर चित माँहि।
रमता राम पिछाण कै, शिवपुर लहै क्यु नांहि।'[2]

यहाँ 'शिवपंथ' और 'शिवपुर' शब्द कल्याणकारी एक परमात्म-मार्ग तथा उस परमात्मा के धाम-निर्वाणधाम के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं।

वैदिक परंपरा अत्यंत प्राचीनकाल से प्रथमतः शैव-मत और फिर वैष्णव मत दो प्रधान शाखाओं में विकसित होती रही। इन दोनों ही मतों के मूल में भक्ति की धारा अद्यावधि प्रवाहित होती आई है। आर्य संस्कृति के मूल में रही यह आध्यात्मिकता ही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। अध्यात्म का अर्थ, आत्मा का चिंतन है। आत्म-बोध के बाद ही परमात्म बोध आता है, और आत्म बोध तब होता है, जब इस प्रकार की उत्कट जिज्ञासा मन में उत्पन्न होती है।

कोऽहं कस्मिन् कथं आयातः ?
को मे जननी को मे पातः ?

अर्थात् हम कौन हैं ? कहाँ से और कैसे आना हुआ ? हमारे माता-पिता कौन हैं ? स्वतः स्फूर्त इस प्रकार की उत्कट जिज्ञासा जाग्रत होते ही आत्मचेतना से इस प्रकार की ध्वनि स्वतः स्फुरित होती है:—

'हम आत्मा हैं। हम ब्रह्मलोक-परमधाम से इस साकारी सृष्टि पर साकार शरीरों में अवतरित हुए हैं। ब्रह्मलोक-परमधाम का अधीश्वर और इस विश्व ब्रह्माण्ड का स्वामी-महेश्वर परमपिता परमात्मा ही हमारा माता-पिता है, उस एक परमात्मा को विद्वानों ने अनेक नामों से पुकारा है।

वह सभी लोकों का एक मात्र स्वामी है।[1]
वह परमात्मा एक और वस्तुतः एक ही है।[2]
उस परमात्मा को जान मनुष्य मृत्य से पार हो जाता है।[3]

सारांशतः परमात्मा के लिए इस प्रकार के भाव भरे वर्णन हमारे वाङ्मय में भरे पड़े हैं : **वह पिताओं का पिता है, देवों का देव है। ईश्वरों का ईश्वर है, वह सर्वोपरि है।** अर्थात् आत्मा ज्योतिर्बिंदु परमात्मा का वंशधर है—आत्मा उसकी अविनाशी संतान है। उसी एक परमात्मा को दुष्ट कर्म करने वालों को रुलाने के

1. भारतीय संस्कृति के आधार, पृष्ठ 150।
2. जिनहर्ष ग्रंथावली—अगर चंद नाहटा।

1. एको विश्वस्य भुवनस्य राजा। ऋग्वेद 3।66।4
2. स एष एक एकवृदेक एव। अथर्ववेद 4।23।1
3. तमेव दिवादित्वानि मृत्युमेति। यजुर्वेद 31।18

कारण 'रुद्र' तथा सबका कल्याणकर्त्ता होने के कारण 'शिव' कहा गया है। जैसे कि "स रुद्रस्य शिवस्सोऽक्षरस्स परमः स्वराट्।[1] वह शिव ही परम सत्य है और जो सत्य है, परम है, भगवान् है, वही सुंदर है। यही कारण कि सर्व आत्माएँ सुन्दर(पावन) बनने के लिए उसी परम सुन्दर की ओर आकर्षित होती हैं। सत्यं, शिवं और सुन्दरं कोई पृथक्-पृथक् वस्तु नहीं, एक ही तत्व की भिन्न-भिन्न भावनाएँ हैं।

सनातन धर्म

'सत्य' सनातन परमधर्म है। ईश्वर परमात्मा द्वारा कभी कोई अहितकर और अनिष्टकर बात नहीं होती क्योंकि वे प्रकृत्या सुखकर्ता और दुःखहर्ता हैं। ऐसे परम कल्याणकारी और करुणा के सागर माता-पिता का स्तवन आदि शंकराचार्य ने इस प्रकार किया है—

'माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बांधवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्॥'

गीता में भी भगवान ने अपना परिचय देते हुए कहा है कि मैं सबका सुहृत हूँ। मैं सर्वलोक महेश्वर, सबका हितैषी हूँ, शुभचिंतक हूँ।[2]

भारत में ओंकारेश्वर नाम से जितने भी मंदिर हैं, सब शिव मंदिर ही हैं। 'ओम' शब्द को अनेक चिंतकों, विद्वानों ने ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के रचियता शिव का वाचक माना है। अतः शिव[3] त्रिमूर्ति, देवों के भी देव हैं। गीता में उन्हें प्रभविष्णु (ब्रह्मा) ग्रसिष्णु (शंकर) और विष्णु (भर्तु) तीनों द्वारा कार्य कराने वाला ज्योतियों की भी ज्योति कहा गया है।[4]

1. कैवल्य उपनिषद् 7।
2. भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्।
   सुहृद सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शांपि मृच्छति॥
   श्रीमद् भगवत् गीता 5/23
3. ओम् अकारी विष्णु रुदष्टि उकारस्तु महेश्वरः
   मकारस्तु स्मृतौ ब्रह्मा प्रणवस्तु त्रयात्मक :
   The Student's Sanskrit English Dictionary by Shrioranl Apte.
4. श्रीमद् भगवद् गीता 13/16

आंध्र प्रदेश के गुडीमहाम नामक स्थान से पुरातात्विक अनूखनन द्वारा जो शिवलिंग प्राप्त हुआ है, उसे शिव का सर्व प्राचीन स्मरण चिह्न माना गया है।[1] मनुस्मृति में भी बताया गया है कि सृष्टि का आरंभ करने के लिए एक अंडाकार ज्योति प्रकट हुई।[2] शिवपुराण के अनुसार भी सृष्टि का प्रारंभ करने के लिए एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ।[3] इन सब प्रमाणों से यह स्पष्ट है कि शिवलिंग अशरीरी परमात्मा का प्रतीक है। प्रारंभ में अंडाकार प्रतिमा के ही रूप में शिव की पूजा होती थी तथा बाद में शिव और शंकर को एक मान लिया। वस्तुतः शंकर की शारीरिक ध्यानस्थ आकृतिवाली मूर्ति इससे भिन्न है। ऐलीफेन्टा से प्राप्त 'त्रिमूर्ति' पाषाण प्रतिमा से भी यह बात स्वयं स्पष्ट है कि शिव और शंकर का तादात्म्य करना अर्थात् उन्हें एक ही मानना मानव की सबसे बड़ी भूल है।

बाईबिल जो यहूदियों, ईसायों की धर्म पुस्तक है—में भी यह उल्लेख है कि आदिकाल में प्रथमतः भगवान् ने ही आदम और ईव (ब्रह्मा और सरस्वती) को जन्म दिया। यहाँ भगवान का नाम 'जिह्वोवा' बताया है, जो संभवतः शिव का ही रूपांतरण है।

इतिहासकारों की मान्यता है कि विक्रमादित्य शिवपूजक था। कवि कुल शिरोमणि कालिदास भी शिव का पुजारी था। भास भवभूति आदि कवियों ने भी शिव की महिमा मुक्तकंठ से गाई है। मोहनजोदड़ों की खुदाई से भी शिव, नंदीगण और कल्पवृक्ष के प्रतीक बाहर आए हैं। प्राचीन ग्रंथों के उल्लेखानुसार राम ने भी महाकाल की स्तुति की है तथा श्रीकृष्ण ने "वंदे महाकालमहं सुरेशम्" कहकर शिव का ही स्मरण किया है। महाकवि तुलसी ने भी श्रीराम के मुख से यह घोषणा करवाई :—

1. मनुस्मृति 1/6
2. ,, 33/8
3. शिवपुराण धर्मसंहिता 'अंक' श्लोक 36

"शिव द्रोही मम दास कहावा
सो नर सपनेहु मोहि न भावा ।"

'कामायनी' में प्रसादजी ने भी कर्म, ज्ञान और इच्छा का जीवन सामंजस्य दिखलाकर परम शिव, परमतत्व को ही प्रतिध्वनित किया है जिससे उनकी आनंदवादी आध्यात्मिकता अधिक व्यावहारिक हो जाती है ।

यह बात तो सभी मानते हैं कि मुहम्मद साहिब ने काबा पर अधिकार कर लिया, तब वहाँ 'संगेअसवद' (जो शिवलिंग का ही प्रारूप है) को रहने दिया। '**उमस्बिन हरशाम**' भी एक अच्छे शिवभक्त कवि थे, जिन्होंने शिव की महिमा की है—

व अहालोलहा अजह अराभीयन महादेव ओ।
मनो जेल इलमुद्दीने भीन हुम व सयतरु ॥"

अर्थात् एक बार भी अगर कोई सच्चे दिल से महादेव की पूजा करे, तो वह अध्यात्म मार्ग में ऊँचा पद पा सकता है। यहाँ महादेव शब्द का प्रयोग शिववाचक ही है।

हमारे मध्यकालीन इतिहास में राजपूत एक तरफ़ जय सोमनाथ और हर-हर महादेव का नारा लगाते आक्रमणों का सामना करते रहे, दूसरी ओर आक्रमणकारी 'अल्लाह हु अकबर' का नारा लगाते,परस्पर खून बहाते रहे। यदि इन दोनों को यह पता होता 'अल्लाह' और 'शिव' एक ही हमारा पिता है, तो आज भारत तो क्या विश्व का इतिहास भिन्न ही होता। आज उस एक पिता को भूलने के कारण ही हिंसा, लूट-पाट, घृणा और नास्तिकता बढ़ती जा रही है। इस सत्य के प्रकाश में हिन्दू, मुसलमान तो क्या विश्वभर के मानव में मतैक्य संभव है। विश्वबंधुत्व की यह **विश्वजनीन** शिवभावना ही आर्यसंस्कृति की प्राणशक्ति है ।

कर्नल टाड के मतानुसार यूनान में भी शिव की पूजा होती है, जिसे वे 'फल्लुस' कहते हैं। 'फल्लुस' शब्द का अर्थ है—फल देने वाला ईश्वर। यहूदी शिव को 'बेल्फेगों नाम से याद करते थे तथा 'शिवलिंग' को 'बाल' कहते थे। भारत में अनेक शिवमंदिर आज 'बालेश्वर' नाम से प्रसिद्ध हैं। मिश्र में 'ओसिरिस' नाम से पूजा होती रही है, जो ईश शब्द से बना है। रोम में शिवलिंग को 'प्रियपस' कहते हैं। प्राचीन अरब देशों में उसके लिए 'लात' शब्द का प्रयोग हुआ है। कुछ इतिहासकार 'लात' शब्द को लिंग का वाचक बताते हैं। अर्थात् प्राचीनकाल में विश्व के सभी देशों में 'शिव' की इसी एक रूप में मान्यता एवं पूजा प्रतिष्ठा थी।

विश्व मानवता

सारांशत: अशरीरी 'शिव' ही शरीर भाव से ऊपर उठाकर रंगभेद, भाषा-भेद, जाति-भेद, वर्ग-भद आदि को समाप्त कर विश्व-मानवता को भ्रातृत्व-के स्नेह में बाँध आज नरक बनी दुनिया को स्वर्ग में रूपांतरित करने के लिए निमित हैं। वह स्वयं को तथा अपने समस्त रहस्यों एवं सत्यों को उद्घाटित करने के लिए भी प्रतिज्ञाबद्ध हैं। गीता में भगवान् के महावाक्य "संभवामि युगे-युगे" इसी संदर्भ में हैं। पतन या अवनति की चरम परिणति, जब सृष्टि का खेल बिगड़ने पर आ जाता है—तब ऐसी धर्मग्लानि एवं मानवीय मूल्यों के ह्रास के समय में भागवत शक्ति का, ईश्वरीय सत्ता का अनुग्रहपूर्ण हस्तक्षेप हुआ करता है। आज हम इसी सक्रांति काल में—फिर भी उसी मंगलमय भागवत् हस्तक्षेप की अनुपम वेला के भाग्यशाली जीवन जी रहे हैं। भागवत् सत्ता उस 'शिव' से सम्पर्क प्राप्त आलोकित प्रज्ञा वाले अधिकारी सूत्रों एवं इन पंक्तियों के लेखक के भी गहन अनुभवों के आधार पर यह स्पष्टत: कहा जा सकता है कि ईश्वरीय अनुग्रह से सम्पन्न यह मंगलकारी हस्तक्षेप वस्तुत: आज घटित हो चुका है। अब उस एक परमात्मा 'शिव' से पुन: प्राप्ति आत्मवादी दर्शन और आत्मवाद की स्थापना ही मानव-भविष्य की उज्ज्वलता, श्रेष्ठता, मंगलमयता, पावनता तथा वैष्णवत्व, नारायणत्व प्राप्ति ही एक मात्र प्रकाशपुँज बनेगी।

महाविनाश में छिपी शान्ति

ब्र० कु० रामलखन शर्मा, बंगलौर कैंट

आज विश्व में हर मानव प्राणी शान्ति की खोज में दर-दर भटक रहा है। सुख और शान्ति से सम्पन्न जीवन ही को वास्तविक जीवन कहा जाता है। इसमें यदि एक की भी कमी है तो जीवन अधूरा अनुभव होता है। आज वैज्ञानिक उपक्रमों द्वारा अनेकानेक सुख साधन भोग करते हुए भी मानव अति अशान्त है। अशान्ति के कारण ही व्यक्ति अपने सन्तुलन व विवेक शक्ति को खो बैठा है। यही कारण है कि आज व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में जो भी कार्य कर रहा है उसका परिणाम दुःखदाई ही निकल रहा है। तथा वातावरण अशान्त बन रहा है। अब यदि हम सब कारणों को समझ लें, तो निवारण सहज ही हो सकता है। जिससे मानव समाज पुनः वास्तविक मानसिक शान्ति का अनुभव कर सके।

मानव जीवन का मूल लक्ष्य ही है शान्ति प्राप्त करना। जन्मते ही हर जीवात्मा अपने लक्ष्य की ओर चल पड़ता है। बच्चा जन्म लेते ही कुछ अपने लिए आवश्यकता का अनुभव करने लगता है और उसके अभाव में अशान्त होकर रोने लगता है। जैसे ही माँ दुग्ध पान करा देती है बच्चा शान्त हो जाता है। अल्पकाल के बाद उसी स्थिति की बार-बार पुनरावृत्ति होती रहती है। जैसे-जैसे शारीरिक विकास होता जाता है वैसे-वैसे अनंत इच्छाओं के बहाव में मानव प्राणी बहने लगता है।

व्यक्ति चाहे किसी भी कार्यकलापों द्वारा अपना जीवन यापन कर रहा हो पर उसके जीवन का उद्देश्य यही होता है कि उसे कैसे भी सम्पूर्ण सुख-शान्ति प्राप्त हो। इसके लिए ही वह नैतिक-अनैतिक, सामाजिक-असामाजिक, सुमार्ग-कुमार्गों को अपनाकर अनेकानेक शारीरिक सुखदायक, भौतिक साधन जुटाता है। शारीरिक इन्द्रियों द्वारा उन सुखों का भोग भी करता है, फिर भी शान्ति का अनुभव नहीं कर पाता है। अर्थात् सन्तुष्ट नहीं होता है। असन्तुष्टता का विपुल रूप ही अशान्ति का सूक्ष्म रूप बन जाता है। इस प्रकार अनेकानेक क्षेत्रों से अशान्ति की विशाल परिधि में घिरा हुआ व्यक्ति मानसिक तनाव का अनुभव करने लगता है। अत्याधिक मानसिक तनाव के कारण ही व्यक्ति विकल हो उठता है। सत्य-असत्य का विवेचन करने की क्षमता खो देता है। अर्थात् पागलपन की स्थिति पर व्यक्ति पहुँच जाता है। अन्तःद्वन्द का मारा हुआ व्यक्ति क्षणिक मानसिक शान्ति के लिए न जाने कहाँ-२ भटकता है। हर चिन्तन में अपने को उलझा हुआ, अशान्ति को ही पाता है। ऐसी दशा में वह सब कुछ भूलना चाहता है। देह, देह के सम्बन्ध, देह की आवश्यकता, दुनिया, दुनिया के वैभव सब कुछ, कुछ भी याद न रहे। इसीलिए आज सम्पूर्ण मानव समाज किसी न किसी नशे में रह रहा है। अर्थात् मद्यपान व गाँजा-चरस जैसे जहरीले धूम्रपान को ही अपना जीने का सहारा बना लिया है। ऐसे कुठाराघात से जब बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तो फिर भ्रष्ट मनोरंजन का साधन अपनाता है। पर अमानवता की ओर ले जाने वाले इन घृणित साधनों से अविनाशी आत्मा को शान्ति कहाँ ? एक सेकण्ड के लिए अशान्ति के घनघोर कुण्ड में व्याकुल व्यथित होकर जिन्दगी के अन्तिम क्षणों को देखने लगती है। उसे जीवन के अवशान में शान्ति की परछाई समीप दिखाई देने लगती है। ऐसे पागलपन की घड़ियों में वह सब कुछ भूलकर अपने जीव हत्या के साधनों को ढूँढ़ने लगता है। और अपनी जीवन लीला समाप्त कर देता है। यही कारण है कि आज विश्व में जीव हत्या और पागल होने की संख्या सबसे अधिक है और दिनों-दिन

बढ़ती ही जा रही है ?

इच्छाओं की अपूर्णता, मानसिक तनाव व सामाजिक अशान्ति की चरम सीमा पर पहुँच कर ऊपर की ओर हाथ जोड़कर अज्ञात् ईश्वर से व्यक्ति यही प्रार्थना करता है कि "हे भगवन् अब मौत हो जाय तो अच्छा है। अब अपने ही पास बुला लो।" अर्थात् इस अशान्त वातावरण में कोई भी व्यक्ति जीना नहीं चाहता है। किन्तु कई बार की जीवन-मरण की अनुभवी आत्मा मौत के समय होने वाले दुःख के डर से मरना भी नहीं चाहती है। क्योंकि धनवान व्यक्ति चोरों के डर से अशान्त हैं। परिवार वाले परिवार के व्यवहार से अशान्त हैं। ताकतवान व्यक्ति दुश्मनों के कारण अशान्त हैं। अशान्ति का अनुभव करना और शान्ति की कामना करने से ही सिद्ध होता है कि अजर, अमर, अविनाशी आत्मा कभी व कहीं अवश्य शांति में रह चुकी है। इसीलिये प्रतिकूल स्थिति बन जाने के कारण शान्ति में रहने व जाने की इच्छा आत्मा कर रही है।

संन्यासी लोग सुख को "काग विष्ठा" की उपाधि देते हैं। किन्तु शान्ति प्राप्त करने के लिए सांसारिक वैभव, मित्र व निकट सम्बन्धियों का भी त्याग कर देते हैं। उनका ब्रह्म तत्व को याद करना, निर्वाणधाम व मुक्ति धाम में जाने की कामना करना ही शान्तिधाम अपने सच्चे घर को याद करना है—जहाँ है ही सम्पूर्ण शान्ति। ज्योति ज्योत समाने का भी यही अर्थ है। क्योंकि हम आत्माओं का घर शान्तिधाम है ही पूर्णलाल ज्योतिर्मय। उसी ज्योतिर्मय लोक में हम सर्व आत्माएँ जाकर पूर्ण शान्त विश्राम लेती हैं। चूँकि द्वापर से आने वाली आत्माओं को सतोप्रधान सुख नहीं मिलता है, अल्पकाल के लिए विकारी सुख आरम्भ हो जाता है। इसीलिए ही संन्यासी लोग सुख को "काग विष्टा समान कहते हैं। क्योंकि वह सच्चे सुख के अनुभवी नहीं होते हैं। किन्तु आत्मा शान्ति धाम में चिरकाल तक रहने के कारण शान्ति की पूर्ण अनुभवी होती है। आत्मा जब इस दुनिया में शरीर धारण कर खेल करने आती है, तब आत्मा को अनेकों बार शरीर रूपी वस्त्र धारण करना पड़ता है। इस प्रकार आत्मा जीवन-मरण के चक्कर में आकर कर्मबन्धनों में फँसने कारण शनैःशनैः अशान्त होती ही जाती है। अब तो समस्त आत्माएँ पूर्णरूपेण अशान्त हो चुकी हैं। कर्मबन्धनों के कारण शक्तिहीन हो थक चुकी हैं। इसीलिए अब सभी आत्माएँ विश्राम लेने के लिए, शान्त अवस्था में रहने के लिये पुनः तड़प उठी हैं।

जब यह दुनिया पूर्ण तमोप्रधान पुरानी व सारहीन हो जाती है। दुनिया में सर्व आत्माएँ पूर्ण अशान्त हो उठती हैं। मानव प्राणी के सभी शान्ति के साधन लुप्त हो जाते हैं, सहारे टूट जाते हैं, आधार हिलने लगता है, तब बेसहारों के सच्चे सहारे, शान्ति के सागर, दया के सागर सर्वशक्तिवान, सर्वआत्माओं के परमपिता परमात्मा ज्योति-बिन्दु 'शिव बाबा' शान्ति धाम से आकर हम आत्माओं को हमारे सच्चे घर शान्तिधाम का परिचय देते हैं। जहाँ हम आदि अनादि रूप में ज्योति-बिन्दु आत्माएँ मन, बुद्धि, संस्कार सहित शांत अवस्था में रहती हैं। वहाँ सर्व आत्माएँ चिन्तन रहित, कर्मबन्धनों से मुक्त, पूर्ण शान्ति अवस्था में रहती हैं। ऐसे प्यारे से प्यारे सच्चे वतन में जाने की विधि हम आत्माओं को परम प्यारा परमपिता परमात्मा सहज ज्ञान और राजयोग बताकर ले जाते हैं। इस प्रकार हम कुछ आत्माएँ परमात्मा के गोद के ब्राह्मण बच्चे राजऋषि सम्मान सहित, सहर्ष अपने घर पहुँच जाते हैं। किन्तु अज्ञानी आत्माएँ जो बाप व बाप के सहज ज्ञान व राजयोग से अनभिज्ञ होती हैं, वह आत्माएँ आणविक शक्ति, प्राकृतिक प्रकोपों व गृहयुद्ध द्वारा होने वाले महाविनाश से धर्मराज द्वारा सजायें भोगकर शान्ति धाम को जाती हैं। इस प्रकार महाविनाश से ही सर्व आत्माएँ अपने सच्चे घर शान्तिधाम में जाकर पूर्ण विश्राम व शान्ति को प्राप्त हो सकती हैं। शान्ति ही आत्मा का मूल स्वरूप है। अतः महाविनाश से ही सर्व आत्माओं को शान्ति मिल सकती है। सर्व आत्माओं की मनोकामना पूर्ण करने वाले परमपिता परमात्मा ही हैं। जो इस समय अपना कर्तव्य कर रहे हैं। अभी नहीं तो कभी नहीं। ●

संजीवनी बूटी

लाय संजीवन लखन जियाये

परमात्मा के माध्यम के गायन में कहते हैं—

राम दुलारे तुम रखवारे,
होत न आज्ञा बिन पैसारे।
तथा
सब पर राम तपस्वी राजा,
तिनके काज सफल तुम साजा।

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि परमात्मा, गुणों के सागर सर्व शक्तिवान, सृष्टि का नियन्ता होने पर भी निराकार होने के कारण अपना कर्त्तव्य न प्रेरणा द्वारा करते हैं और न केवल स्वयं ही अपना कार्य करते हैं। उनके कार्य सम्पन्न करने का माध्यम है और वह माध्यम एक ऐसा नर तन है जिसको श्रेष्ठ नर तन नहीं कह सकते, बल्कि कपीश अथवा बन्दर तुल्य नर तन ही कहा जायगा। इसी बन्दर तुल्य नर तन या पतित नर तन के माध्यम द्वारा ही परमात्मा अपना कार्य सम्पन्न करते हैं।

परमात्मा के दूत अथवा परमात्मा का कार्य सम्पन्न करने वाले नर तन का ही नाम हनुमान, पवन सुत, अन्जनिपुत्र, केसरी नन्दन, संकट मोचन आदि-आदि हैं। ये उस तन के नाम हैं जिस तन में परमात्मा परकाया प्रवेश करते व उस तन को अपना कर्त्तव्य करने का माध्यम बनाते हैं। हनुमान अर्थात् जिसने अपने विकारी मन को हनन किया। पवन सुत का अर्थ है हवा अर्थात् स्वयं निराकार शिव परमात्मा द्वारा उत्पत्ति। अन्जनि पुत्र का अर्थ है परमात्मा शिव के ज्ञान अन्जन द्वारा नया जन्म प्राप्त करने वाला। केसरी नन्दन शब्द स्पष्ट करता है कि परमात्मा पतित साधारण तन में आते हैं और उस पतित तन की उत्पत्ति पतित दुनिया में पतित शरीर द्वारा ही होती है।

इसी निराकार परमात्मा का नाम राम अथवा शिव है। राम अर्थात् सृष्टि का नियन्ता (उत्पति, पालना और विनाश करने वाला)। शिव अर्थात् कल्याण-कारी। यही निराकार परमात्मा शिव सूक्ष्म ज्योति स्वरूप होने के कारण, ज्योति के आकार की पिन्डी के रूप में मन्दिरों में पूजे जाते हैं। परमात्मा के एक इस आकार की ही मान्यता सम्पूर्ण विश्व में, सर्वधर्म में प्रचलित है। परमात्मा के एक इस आकार की मूर्ति ही बहुमूल्य हीरे सोने आदि से सम्पन्न बनाई गयी। जिसमें से भारत पर महमूद गजनवी ने आक्रमण द्वारा कई मन अथवा कई ऊँट सोना लूटा। यही शिव के मन्दिर भारत में अमरनाथ, सोमनाथ, रामेश्वरम, गोपेश्वर, बाबूलनाथ आदि नाम से पवित्र तीर्थ के रूप में गाये जाते हैं। ये नाम भी परमात्मा के कर्त्तव्य के रूप में गुण वाचक नाम हैं। इस मूर्ति की मान्यता इस्लाम धर्म के पवित्र तीर्थ मक्का में रक्खे काले पत्थर के रूप में है। इसाई धर्म में ज्योति के आकार के रूप में है। जापान आदि कई स्थानों पर बौद्ध अनुयायी भी इसी मूर्ति पर अपना ध्यान एकाग्र करते हैं।

परमात्मा के साकार रूप में कर्तव्य करने का विशिष्ट समय है। इसी विशिष्ट समय के लिये गायन है —

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम ॥
(गीता अ० ४।श० ७)

अर्थात् तमोप्रधान कलियुग के अन्त में जब भारत एवं सम्पूर्ण सृष्टि को सतोप्रधान सतयुगी

बनाना होता है, तभी साधारण नर तन के रूप में परमात्मा को प्रकट होना पड़ता है। परमात्मा का परकाया प्रवेश हुआ तन साधारण है, पतित है इसी की पुष्टि गीता भी करती है कि "अवजानन्ति मां मूढ़ा" (देखिये गीता अ० ६।२१०११)।

परमात्मा का कर्त्तव्य मुर्दे को जिन्दा करना या कोई चमत्कारी कार्य करना नहीं होता है। परमात्मा का मुख्य कर्त्तव्य है ज्ञान द्वारा पतितों को पावन बनाना। परमात्मा द्वारा दिये हुए ज्ञान को ही ज्ञानामृत, अमृत धारा. ज्ञान गंगा, संजीवनी बूटी आदि कहते हैं। आधा कल्प द्वापर से माया द्वारा ग्रसित, मूर्छित या मृत आत्मायें सतयुग, त्रेता युग आधा कल्प के लिये परमात्मा के ज्ञान द्वारा अमृत तुल्य, अमर अथवा सुरजीत बन जाती हैं। तभी तो गायन है "लाय सन्जीवन लखन जियाये।" लखन अर्थात् पांच विकारों रूपी माया के कारण सम्पूर्ण आत्माओं के मन का लक्ष्य जब विकृत हो जाता है, तब मन मूर्छित हो जाता है। ऐसे अवसर पर कलियुग रूपी अन्धेरी रात्रि में ज्ञान सन्जीवनी बूटी द्वारा अमृत बेले अर्थात सतयुग के पूर्व ही संगम समय पर परमात्मा मायाकी बेहोशी से जाग्रत करते हैं अर्थात् पवित्र बनाते हैं और "मनमनाभव" द्वारा मन के लक्ष्य में स्थित करते हैं।

परमात्मा का ज्ञान धारण करने वाली आत्मायें ब्रह्मचर्य रूपी पवित्रता एवं याद में स्थित हो दूसरों को भी ब्रह्मचर्य रूपी पवित्रता एवं याद में स्थित कराती हैं। परमात्मा का ज्ञान धारण करने वाली मुख्य आत्मा वही होती जिसमें परमात्मा प्रवेश करते हैं। उसी का नाम हनुमान, प्रजापिता ब्रह्मा, नन्दी गण आदि पड़ता है। हनुमान का लंगोट ब्रह्मचर्य का प्रतीक है। गदा का ऊपर रहना, पाँच विकारों से युद्ध स्थल में रहने का चिन्ह है। इसी मुख्य आत्मा के ज्ञान द्वारा अन्यों के भी मन के सारे भूत दूर हो ब्रह्मचर्य रूपी पवित्रता एवं याद रूपी स्वस्थिति की प्राप्ति होती है। इसीलिये गायन है "भूत पिशाच निकट नहीं आवै" और अन्त में इन्हीं धारणाओं द्वारा २१ जन्मों के लिये जीवन मुक्ति की प्राप्ति होती है। तभी तो गायन है—"अन्त काल रघुवरपुर जाई"। परमधाम, जहां सर्व आत्माओं का घर है, उसी को रघुवरपुर या अमरलोक कहते हैं और सतयुगी, त्रेतायुगी देवताओं के सुखधाम को भी रघुवरपूर या अमरलोक कहते हैं। इस पतित दुनियां का तो मृत्युलोक के रूप में गायन है। परमात्मा शिव का मुख्य कार्य ही है इस मृत्युलोक को अमर लोक बनाना एवं सर्व आत्माओं को अपने साथ अमरपुरी में ले चलना, तत्पश्चात् अधिकारी आत्माओं को अमरपुरी में राज्य भाग देना।

—:o:—

मन रे चल बाबा के गाँव

कृष्णलाल मधुकर, धुर्वा, राँची

मन रे चल बाबा के गाँव !
मोह निशा नहीं वहाँ रहत कछु,
पड़त न पाँव कुठाँव !
मन रे चल बाबा के गाँव।
अति आनन्द की वर्षा बरसत।
आत्म-ज्ञान पाके सब हरसत।
यहीं तन में देवता बनत सब,
तज विकर्म के छाँव।
मन रे चल बाबा के गाँव।
मंदिर मस्जिद है सब माया।
मूरख तू काहे भरमाया।
शिव को लखा सो शिव को पाया,
चढ़ प्रजापिता के नाव !
मन रे चल बाबा के गाँव।

ब्राह्मण जीवन में सम्पूर्ण पवित्रता क्या है ?

लेखक—ब्र० कु० श्रीराम, कृष्ण नगर, देहली

ब्राह्मण जीवन का सबसे पहला धर्म ही है—पवित्रता। परन्तु यह पवित्रता केवल स्थूल (अन्न, वस्त्र, शरीरादि की) पवित्रता तक ही सीमित नहीं है, अपितु संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता का अंशमात्र भी न हो, उसे सम्पूर्ण पवित्रता कहेंगे। अतः सम्पूर्ण पवित्रता में निम्नलिखित धारणाएँ सम्मिलित हैं—

❀ **मन की पवित्रता**—(i) मन में कोई भी व्यर्थ संकल्प-विकल्प या परचिंतन न चले, बल्कि सदा स्वचिंतन व शुभ चिंतन ही चले। (ii) मन तभी पवित्र होगा जब यह मंदिर के समान बन जाए जहाँ शिव बाबा बैठ सकें। वह तभी होगा जब मन में से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, निंदा, घृणा, अनुमान, परचिंतन रूपी कूड़ा-कचरा बाहर निकालकर उसकी जगह सभी दिव्य गुणों की लिपाई-पुताई करें।

❀ **बुद्धि की पवित्रता**—(i) हमारे सर्व संम्बन्ध एक बाप के साथ हों, इसके विपरीत यदि बुद्धि का लगाव-झुकाव किसी देहधारी की तरफ़ है तो बुद्धि स्वच्छ व सतोप्रधान नहीं है।

(ii) अगर बुद्धि प्रकृति के आकर्षणों अथवा कर्मेन्द्रियों के रसों के आकर्षण तरफ़ जाती है अर्थात् मृग-तृष्णाओं (आशाओं, इच्छाओं) का शिकार बनती है तो उसे सतोप्रधान बुद्धि नहीं कहेंगे।

(iii) अगर बुद्धि एक बाप की याद में स्थिर न रहकर इधर-उधर, अनेक रास्तों पर भटकती है तो वह ठिक्कर अथवा पत्थर बुद्धि है, उसे पवित्र बुद्धि नहीं कहेंगे।

❀ **संस्कारों की पवित्रता**—(i) यदि आत्मा में तीनों स्वरूपों—आदि, अनादि और ब्राह्मण जीवन के गुण हैं तो हम कह सकते हैं कि उस आत्मा के संस्कार पवित्र हैं। यदि आत्मा में अभी भी भक्ति के वा शूद्रपन के संस्कार हैं तो उस आत्मा के संस्कार पवित्र नहीं कहला सकते।

(ii) यदि हम अपने संस्कारों को समय और व्यक्ति के अनुसार मोल्ड नहीं कर सकते तो भी हमारे संस्कार पवित्र नहीं, क्योंकि जब तक हम एक-दो के साथ संस्कारों की रास नहीं मिला सकते तब तक हम एकमत कहाँ हुए। जहाँ द्वैत है उसे पवित्र नहीं कहेंगे।

❀ **आँखों की पवित्रता**—आँखों के लिए श्रीमत है कि हमारी दृष्टि पवित्र होनी चाहिए अर्थात् भाई-भाई की दृष्टि हो। इसके अतिरिक्त हमें आँखों के द्वारा किसी के अवगुण नहीं देखने हैं। वस्तुतः बेहद की पवित्रता तब कहेंगे जब हम इन आँखों से पुरानी दुनियाँ को देखते हुए भी न देखें, बुद्धि रूपी आँख द्वारा केवल एक बाप को ही देखें।

❀ **कानों की पवित्रता**—कानों के लिए श्रीमत है ज्ञान के अलावा व्यर्थ की बातें न सुनो तथा न ही किसी की बुराई सुनो। क्योंकि यदि हम व्यर्थ की बातें सुनेंगे तो सुनकर मन में उसका व्यर्थ चिंतन चलेगा, जिससे आत्मा पर वेस्ट का वेट चढ़ जाएगा और आत्मा भारी तथा मैली हो जाएगी।

❀ **मुख की पवित्रता**—मुख के लिए श्रीमत है कि धीरे, मीठा और कम बोलो। किसी को दुःख देने वाले व कड़वे बोल न बोलो। इसके अतिरिक्त दूसरों में अवगुण देखकर उनका एक-दो को वर्णन (निंदा) करना अथवा व्यर्थ बोलते रहना, यह भी मुख की अपवित्रता है।

—:o:—

सूरत में पत्रकार तथा लेखकों के स्नेह मिलन के कार्यक्रम में बोलते हुए भ्राता बृज मोहन जी। मंच पर (दाएं से) ब्र० कु० लता, अंजनी बहन, मगन भाई, लीना बहन तथा डाह्या भाई बैठे हैं

पानीपत में निकाली शोभा यात्रा का दृश्य

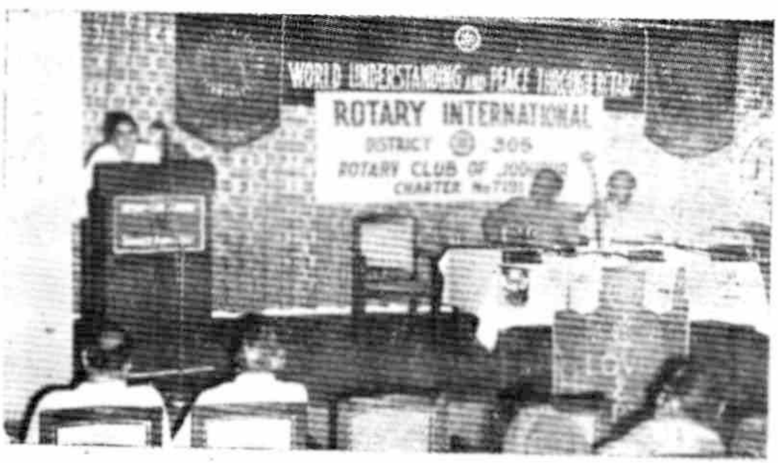

रोटरी कलब जोधपुर में ब्र० कु० फूल जी अपने विचार प्रकट कर रही हैं विषय था "राजयोग के द्वारा मानव का दिव्यीकरण"

"साहित्य–समाज का दर्पण है"

ब्र० कु० कुसुम, महसाना

मनुष्य समाज का एक अभिन्न अंग है, व्यक्तियों अथवा मनुष्यों के समुदाय को ही समाज कहा जाता है। समाज को उच्च स्तर की अथवा पतन की ओर ले जाने में साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह सर्व विदित मान्यता है—'कि समाज और साहित्य का गहरा सम्बन्ध है। जिस प्रकार हम देखते हैं कि वीरगाथा काल में उस समय वीररस से ओत-प्रोत साहित्य था । राजाओं के दरबारी कवि, लेखककार वीरतापूर्ण काव्य का सृजन करते थे, जिसको पढ़कर के सारे समाज में वीरता की लहर व्याप्त हो जाती थी। जैसा साहित्य होता है उसी अनुरूप समाज होता है। साहित्य व्यक्ति के अन्तराल में अमिट छाप छोड़ देता है। भक्ति काल का भी स्वर्णिम इतिहास देखें तो ज्ञात है कि उस समय के स्वर्णिम काल में मनुष्यों के अन्दर श्रद्धा, भक्ति की भावनाएं थीं क्योंकि उस समय कबीर जैसे संत समाज सुधारक थे तो उनके भक्ति युक्त साहित्य से सारे वातावरण में भक्ति की लहर थी। कवि, साहित्यकार अथवा कलाकार के महत्त्व को स्वीकार करते हुए किसी ने ठीक ही कहा है कि—

"अपारे काव्य संसारे कविरेव प्रजापति।
यथास्मै रोचते विश्वं तदेदं परिवर्त्तते।"

अर्थात् इस अपार संसार में मानो कवि ही प्रजापति है, वह जैसे चाहे संसार को मोड़ सकता है अथवा वह अपनी कविता में भावनाओं के आधार पर क्या नहीं कर सकता है ।

आधुनिक नैतिक पतन के युग में आज कवि की कलम काली स्याही को चाट कर ऐसे कलंकित साहित्य का सृजन कर रही है, घृणित नावल, सिनेमा जो मनुष्यों की वासना को उत्तेजित करते हैं। आज के युग में जबकि मनुष्य में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो चुका है। तो वासनोत्तेजक साहित्य की बजाय यदि उज्जवल चरित्र के निर्माण के उद्देश्य से प्रेरणादायक साहित्य का सृजन करें तो देश का निश्चय ही कल्याण हो सकता है, क्योंकि कविता और कला के मेल से मनुष्य के मन पर वह अमिट छाप पड़ सकती है जिससे मनुष्य घृणित कुकृत्यों से प्रभावित नहीं होगा । जबकि मनुष्य अश्लील, गन्दे साहित्य से अश्लीलता की ओर अग्रसर होता है, तो वह ज्ञान-वर्द्धक, उज्जवल प्रेरणादायक साहित्य से निश्चय ही उज्जवलित मार्ग की ओर भी अग्रसित हो सकता है।

इस बुद्धिजीवी युग में अब भक्ति की नहीं बल्कि उस ज्ञान की वीणा की झन्कार की आवश्यकता है जिससे मनुष्य अपने ज्ञान चक्षु को खोल सके और अपने मन को अंधकारमय रास्ते पर जाते हुए उससे हटकर प्रकाशमय ज्ञान मार्ग की ओर ले जाए। क्योंकि आज के साहित्य सृजना को देख कर यह ज्ञात होता है कि जो अश्लील साहित्य है वैसा ही आज का मानव समाज बन गया है। समाज को सुधारने, मानव में ज्ञानपयोगी धारणा के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि जो अश्लील साहित्य है उस पर प्रतिबन्ध (Restriction) लगाना ही उचित है।

विश्व इतिहास में ऐसी भी कृत्तियाँ हैं जो मनुष्य में मानवोचित सद्गुणों के विकास करने का शुभ कार्य भी करती हैं, ऐसा भी साहित्य है जो हमारे अतीत के गौरव का प्रतीक है। और आज का जो साहित्य है वह पतन रूपी दर्पण बन गया है। आज का साहित्य फिल्में, उपन्यास, आज मनुष्यों को घुन की भाँति चाट रहा है। किसी ने सच ही कहा है कि—

"साहित्य समाज का दर्पण है" अर्थात् जैसा आज

का धुँधला साहित्य है उसका वैसा ही धुँधला प्रतिबिम्ब समाज पर पड़ता है। विश्व में नवचेतना, जागृति के लिए आज वीररस से भरपूर्ण सृजना की आवश्यकता नहीं है जो कि मनुष्य में क्रोध की अग्नि में तीव्रता लाये और वह हिंसा के लिये प्रेरित हो, बल्कि उसके अन्दर उस करुणा, स्नेह, अथवा आत्मबल की आवश्यकता है जिससे कि वह अन्तर में पैदा हुई हिंसा अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, विकृतियों का सामना उस आत्मविश्वास (Confidence) ज्ञानवर्धन से करे। इसके लिए वह स्वयं को पहचाने जिससे उसके अंदर आत्मिक ज्ञान जागृत हो और वह सभी को आत्मिक दृष्टि से देखे। अगर उसकी दृष्टि आत्मिकता की होगी तो उसके अन्दर जो भी विकृतियाँ उत्पन्न हुई होंगी वह भाई-भाई की अर्थात् भ्रातृत्व की भावना से समाप्त हो जाएंगी।

आज पतन की ओर जाते हुए युग को उत्थान की ओर ले जाने के लिए ऐसे साहित्य की आवश्यकता है जिससे मनुष्य में पवित्रता का निर्माण हो। 'पवित्रता' में ही वो शक्ति (Power) है जो कि मनुष्य में आध्यात्मिक क्रान्ति को ला सकती है और इसी आध्यात्मिक क्रान्ति के द्वारा विश्व परिवर्तन अथवा नवयुग का निर्माण हो सकता है। स्वामी विवेकानन्द ने भी 'पवित्रता' (Purity) के महत्त्व को दर्शाते हुए कहा कि—मुझे अपने जैसे ही सौ बाल ब्रह्मचारी चाहिएं जिससे मैं विश्व में परिवर्तन का कार्य कर सकता हूँ।" तो पवित्रता में वो बल है जिससे कि मनुष्य पतन के खड्डे में गिरने से बच सकता है।

नारियों में नवचेतना की आवश्यकता

आधुनिक समय में ऐसे साहित्य की आवश्यकता है जिससे कि नारियों में नवचेतना, आध्यात्मिक क्रान्ति जागृत हो और वो नारी जिनकी पूजा 'वन्देमात्रम्' अर्थात् वन्दना करने योग्य माताओं के रूप में की जाती है, साहित्य से प्रेरणा द्वारा सार्थक कर सकें। जिन नारियों का हमेशा से अग्रणीय स्थान जैसे —सीता राम, राधे कृष्ण के रूप में रहा है वही नारी आज अश्लील साहित्य, सिनेमा, नावल आदि के प्रभाव में आकर अपना सुचरित्र खो बैठी है और मात्र विषय वासनाओं का केन्द्र बनी हुई है। तो साहित्य ऐसा ज्ञानयुक्त प्रेरणादायक कार्य करे, जिससे आज की नारी अपने भूले हुए स्वरूप की पुनः स्मृति कर, जागृत होकर पवित्रता रूपी वीणा उठाकर जन-जन के हृदय को करुणा, प्रेम, स्नेह रूपी झन्कार से प्रभावित कर सके तभी साहित्य सार्थक सिद्ध हो सकता है। और इसके लिए वो साहित्य जो मनुष्य में उत्तेजना उत्पन्न करता है, उसकी रूपरेखा में परिवर्तन करना आवश्यक है।

आज साहित्य ने प्राकृतिक सौन्दर्य, भौतिक प्रसाधनों से युक्त रचना के माध्यम से मानव को भौतिकवाद में लोलुप्त करके उसे मान, शान, इच्छाओं का भिखारी बना दिया है जिसके कारण वह और ही ज्यादा व्यसनों अथवा भौतिक साधनों के पीछे दौड़ता जा रहा है। लेकिन आज इन साधनों की प्रगति के बावजूद भी मनुष्य अपने को थका हुआ, अशान्त और तनाव युक्त अनुभव करता है। तो इसके लिए साहित्य मनोरंजन के साथ-साथ धार्मिक भावनाओं से युक्त, सात्विक, शील होना चाहिए, जिससे कि मनुष्य जो आदि में श्रेष्ठ देव मानव के रूप में था, फिर से बनाने में सहयोग मिले और भविष्य दुनिया जो स्वर्ग की महिमा के रूप में गाई जाती है पुनः स्थापना हो सके। ○

जयपुर में राजस्थान चैम्बर आफ कामर्स के अध्यक्ष शिवकुमार मानसिंह व सचिव के. एल. जैन चित्र समझते हुए

वापिस घर जाना है

लेखिका—ब्रह्माकुमारी गोदावरी, मुलुंड (बम्बई)

संवाद—माया और प्रभु का

प्रभु—अरे, माया तू छोड़ मेरे बच्चों को वापिस घर जाने दे।
अरे, माया तू मुखड़ा ले मोड़, बच्चों को घर जाने दे।
माया—क्यों छोड़ूँ मैं आप के बच्चों को वापिस नहीं जाने दूं।
क्यों मोड़ूँ मैं मुखड़ा बच्चों से वापिस नहीं जाने दूँ।
प्रभु—दोहा—अरे सता रही तू घड़ी-घड़ी बच्चे मेरे हैं सिकिलधे।
सारे कल्प में मिले मुझे एक बार मेरे बच्चे हैं भोले भाले।
तू अपने में जोड़ ना बच्चों को वापिस घर जाने दे—
अरे माया……
माया— ,, जोड़ूँ ना मैं किसी को अपने में, आपे ही जुट जाये।
एक बार जो जुट गया वह आप से भी छुट जाये।
मैं कहती हूँ ऐसे बच्चों को वापिस नहीं जाने दूँ—
क्यों छोड़ूँ……
प्रभु— ,, अरे कितना भी हो आकर्षण तेरा पर मैं भी हूँ सर्वशक्तिवान।
योग शक्ति से जीतें तुझे, भले कितनी भी तू हो पहलवान।
माया जीते जगत जीत बच्चों को वापिस घर जाने दे।
अरे माया……
माया— ,, अरे बड़े-बड़े ऋषि मुनि और साधु सन्त हर नर नारी।
जीत सके ना मुझे कोई, मैं बना दूँ सभी को विकारी।
योगी, भोगी और ढोंगी बच्चों को वापिस नहीं जाने दूँ।
क्यों छोड़ूँ……
प्रभु— ,, जो मुझ संग सदा रहे, मेरे ज्ञान के रंग में रंग जाय।
राजयोगी बनकर याद करे मुझे, वह किसी से नहीं हिल पाये।
ऐसे निश्चय विजयी बच्चों को वापिस घर जाने दे।
अरे माया……
माया— ,, अरे! हिले न कोई पांव से, तो पकड़ूँ मैं उनकी नाक।
घुटका खाये मन ही मन में और बना दूँ मैं नापाक।
देह अभिमानी, बहिर्मुख बच्चों को वापिस नहीं जाने दूँ।
क्यों छोड़ूँ……
प्रभु— ,, काले बादल विकारों के शोर करें दिन रात।
निरंतर रहे मेरी याद में उन्हें रहे स्वयं कि फिकरात।
सदा कल्याणकारी बच्चों को वापिस घर जाने दे।
अरे माया……
माया— ,, बदल दूँ एक सेकंड में मन, वचन और कर्म।
मैं महारानी हूँ नर्क की, सिखा दूँ करना कुकर्म।
अधर्मी, परधर्मी बच्चों को वापिस नहीं जाने दूँ।
क्यों छोड़ूँ……

प्रभु— ,, अरे सत्य धर्म की स्थापना करने आया मैं।
ब्रह्मा तन का आधार लिया—गीता सुनाऊँ मैं।
स्वधर्मी सत्कर्मी बच्चों को, वापिस घर जाने दे।
अरे माया······

माया— ,, करोड़ों में कोई सत्धर्मी बने, हजारों में कोई हिम्मतवान।
बाकी मैं मन पसन्द सभी को, कोई छोड़े ना मेरी जान।
क्या कहूँ न मैं ऐसे बच्चों को वापिस घर जाने दूँ।
क्यों छोड़ूँ······

प्रभु— ,, अरे अलबेली माया मासी हो, किसने किया तुझे पसन्द।
कभी रुलावे सतावे सदा, तू कैसे बनी मन पसन्द।
तू पंजा न मार बच्चों को वापिस घर जाने दे।
अरे माया······

माया— ,, मैं नशीली विकारों की, मेरी सूरत बन्दर समान।
राजा, रंक, दु:खी, रोगी, मैं पकड़ूँ सबकी कमान।
ऐसे अमीर फकीर बच्चों को, वापिस नहीं जाने दूँ।
क्यों छोड़ूँ······

प्रभु— ,, अरे ! ज्ञानसागर के सामने क्या राजा क्या रंक।
लोहा भी पारस बने, मिटे माया का जँक।
ऐसे फूल समान बच्चों को वापिस घर जाने दे।
अरे माया······

माया— ,, अरे फूल हो चाहे फल हो, मुझे न किसकी परवाह।
मिटा दूँ मैं सबको धूल में, शूल बने या बादशाह।
ऐसे अज्ञानी, विज्ञानी बच्चों को वापिस नहीं जाने दूँ।
क्यों छोड़ूँ······

प्रभु— ,, अरे माया बेटी समझ जा, कर ना अधिक शोर।
शिव शक्ति पाण्डव सेना, कर रही गजगोर।
राजयोगी शक्ति स्वरूप बच्चों को वापिस घर जाने दे।
अरे माया······

राजयोगी—योग की शक्ति की किरणों से लायेंगे तेरा अन्त
एक सेकंड भी ना लगे, ऐसा है ज्ञान करन्ट।

प्रभु— ,, निर्विकारी निराकारी बच्चों को वापिस घर जाने दे।
अरे माया······

माया— ,, अरे योग शक्ति की किरण से मेरा अंग-अंग जल जाय।
क्षमा करो हे राजयोगी, मेरी जान कहीं न चली जाय।
मुझे विदाई दो अपने हाथों से, वापिस घर जाने दो।
क्यों छोड़ूँ······

प्रभु— ,, निर्भय बनो, निडर बनो, बनो फ़रिश्ता स्वरूप।
परमधाम मुझ संग चलो, मैं हूँ शिव ज्योति स्वरूप।
मैं साथी हूँ आप बच्चों का वापिस घर जाना है।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

१६ सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत सेवा समाचार

नीमच में महिला-वर्ग की सेवा—नीमच सेवा-केन्द्र पर चल रहे १६ सूत्रीय कार्यक्रम की वर्गीकरण सेवा के अन्तर्गत दिनाँक ४ अक्टूबर को महिलाओं के लिए विशेष आध्यात्मिक परिसंवाद जो कि इनर-व्हील क्लब एवं महिला एसोसिएशन नीमच के संयुक्त तत्वावधान में, नवरात्रि पर्व के उपलक्ष में केवल महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम आध्यात्मिक परिसंवाद का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यक्रम की मुख्य अतिथी एवं प्रमुख वक्ता के रूप में संभागीय प्रशासिका ब्रह्माकुमारी निर्मलाजी को निमन्त्रित किया गया।

↑ चल्लाकेरे सेवा केन्द्र के उद्घाटन समारोह में प्रवचन करते हुए ब्र० कु० बसुराज जी, मंच पर के० तम्मय्या तथा श्रीनिवास मूर्ति मजिस्ट्रेट चल्लाकेरे दिखाई दे रहे हैं।

"विश्व परिवर्तन आध्यात्मिक मेला और सम्मेलन"

कटनी:—रविवार ११ अक्टूबर सायं ७.३० बजे कटनी के साधूराम स्कूल मैदान स्थल पर आयोजित विश्व परिवर्तन आध्यात्मिक मेले और सम्मेलन का उद्घाटन भ्राता एच० सी० माथुर जी, जनरल मैनेजर, टेक्नीकल एण्ड डेव्लपमेण्ट सर्किल, पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ्स डिपार्टमेन्ट जबलपुर, ने किया। १० अक्टूबर १९८१ को इन्दौर जौन के श्वेत वस्त्रधारी ३५० भाई बहनों की एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। मध्य प्रदेश के उद्योग मन्त्री भ्राता भण्डिया जी ने मेले में आयोजित राजयोग शिविर का उद्घाटन किया। मध्य प्रदेश कांग्रेस आई के अध्यक्ष भ्राता सुन्दर शर्मा जी शहर के प्रमुख अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

↑ भावनगर सेवाकेन्द्र द्वारा बेंकर्स के लिये आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित बेंक के अधिकारीगण बड़े ही ध्यान-पूर्वक प्रवचन सुनते हुए

←बोकारो में प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् वहां के विधायक भ्राता अकलू राम महतो तथा ब्र० कु० बहन भाई खड़े हैं

सतारा—सेवा केन्द्र की ओर से ४-१०-८१ को पत्रकार परिषद का आयोजन किया गया, जिसमें सतारा ज़िला के सभी पत्रकारों, लेखकों तथा प्रैस संवाददाताओं ने भाग लिया; उसमें से ऐक्य,समाचार भारती, सत्यवादी और पुढारी आदि उल्लेखनीय हैं। इस अवसर पर १६ सूत्री कार्यक्रम का स्पष्टीकरण किया गया तथा साथ-साथ विद्यालय के परिचय से भी अवगत कराया गया। अनेक प्रश्न भी पूछे गए। अन्त में सभी ने आश्वासन दिया कि जब भी आपके कार्यक्रम होंगे उनको समाचार पत्रों में प्रकाशित करेंगे।

बल्लभगढ़—सेवा केन्द्र से ब्र० कु० सुदेश लिखती हैं कि वहाँ का वार्षिक उत्सव बड़े धूमधाम से तथा उत्साह पूर्वक मनाया गया। रक्षा बंधन के अवसर पर एस० डी० एम०, तहसीलदार, एम० पी० तथा अनेक वी० आई० पीज० को पवित्र राखी बांधी गई तथा १६ सूत्री कार्यक्रम के बारे में भी अवगत कराया गया। इसके अतिरिक्त जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर 'राधे-कृष्ण','लक्ष्मीनारायण' की चैतन्य झांकियाँ सजाई गईं तथा एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया, जिन से कई हज़ार आत्माओं ने लाभ उठाया।

अलवल (आन्ध्र प्रदेश) में शान्ति यात्रा का दृश्य

बड़ौदा—सेवा केन्द्र से ब्र० कु० राज तथा ब्र० कु० निरंजना लिखती हैं कि सितम्बर १९८१ में गणेश चतुर्थी के उपलक्ष्य में जवाहरनगर के पुलिस स्टेशन ग्राउंड में चल रहे प्रोग्राम में १० दिन के लिए "विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी" रखी गई, जिसमें मुख्य अतिथि संतराम मंदिर के संत दयाराम जी तथा पुलिस इंस्पेक्टर भ्राता अहीर जी थे। इसके अतिरिक्त वहीं पर 'विश्व नव-निर्माण' प्रोजैक्टर शो तथा राजयोग फिल्म का कार्यक्रम भी रखा गया। जिनसे लगभग २५००० आत्माओं ने लाभ उठाया। १० सितम्बर को पत्रकार परिषद का भी आयोजन किया गया, जिससे संबंधित समाचार संदेश, लोक सत्ता, गुजरात समाचार, बड़ौदा समाचार, चित्रा, जन्मभूमि, नवभारत टाइम्स, प्रताप आदि के संवाददाताओं ने अपने समाचार पत्रों में प्रकाशित किया, जिसमें १६ सूत्री कार्यक्रम की रूपरेखा समझाई गई।

नवरात्रों के अवसर पर ईश्वरीय सेवा

पोरबंदर—सेवा केन्द्र की ओर से नवरात्रि के अवसर पर बिरला हॉल में नौ देवियों—संतोषी, काली, गायत्री, खोडियार, लक्ष्मी, सरस्वती, उमा, जगदम्बा एवं बढुचरा की चैतन्य झाँकियाँ सजाई गई, जिनकी सारे शहर में धूम मच गई तथा ४ दिन तक देखने वालों की इतनी भीड़ थी कि कंट्रोल करना मुश्किल हो रहा था। इनसे लगभग ४०,००० आत्माओं ने लाभ उठाया जिसमें सभी वर्गों के लोग —व्यापारी, डाक्टर, सरकारी एवं गैर सरकारी अधिकारी तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति भी शामिल हैं। बिरला हाल के सेक्रेटरी ने कार्यक्रम से प्रभावित होकर हॉल की अनुमति ३ दिन के स्थान पर ४ दिन के लिए दे दी। इसके अतिरिक्त पोरबंदर सेवा केन्द्र की ओर से कुतियाणा, माधव पुर गांवों में तथा स्थानीय अंध गुरुकुल में और अन्य अनेक स्थानों पर रक्षा बंधन तथा जन्माष्टमी के अवसर पर विविध आध्यात्मिक कार्यक्रम रखे गए, जिनसे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

सम्बलपुर—सेवा केन्द्र से ब्र० कु० पार्वती लिखती हैं कि बरगड़ नामक सबडिविजन में दुर्गापूजा के अवसर पर ५-१०-८१ से ८-१०-८१ तक एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि वहाँ के सबजज, भ्राता श्यामसुन्दर पांडे और एस० डी० ओ०, भ्राता हरे कृष्ण होते थे। यह आयोजन बहुत सफलतापूर्वक और सुचारु रूप से चला तथा इससे हज़ारों दुःखी-अशांत आत्माओं को प्यारे बाबा का संदेश प्राप्त हुआ।

बार्शी शहर में आयोजित कार्यक्रम में भाषण करती हुई ↑ ब्र०कु० सोम प्रभा, उनके बायें ओर भ्राता विनायक राव पाटिल, भ्राता विश्वनाथ ठोकड़े, एस० पाटिल तथा दाईं ओर ब्र० कु० महानंदा जी बैठी हैं

आनंद—सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि नवरात्रों के त्योहार के उपलक्ष्य में सेवाकेन्द्र पर तथा अड़ास, बेड़वा और काविठा गांवों में जगदम्बा, सरस्वती तथा लक्ष्मी, इन तीन देवियों की चैतन्य झांकियाँ सजाई गई और साथ-साथ प्रवचन कार्यक्रम भी आयोजित किए गए, जिनको कई हज़ार आत्माओं ने बड़ी रुचि से देखा और सुना।

मिर्जापुर—सेवा केन्द्र की ओर से शहर से ५ कि० मी० दूर विंध्याचल क्षेत्र में नवरात्रों के उत्सव पर, जहाँ विंध्यावासिनी देवी का बड़ा भव्य मेला लगता है, बड़े उमंग और उत्साह के साथ प्रदर्शनी व पर्चों द्वारा हज़ारों आत्माओं को परमपिता का तथा शिव शक्तियों का वास्तविक परिचय दिया गया। इसके अतिरिक्त राजयोग शिविर तथा प्रोजैक्टर शो के द्वारा भी अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया। आशा है कि यहाँ पर शीघ्र ही उपसेवाकेन्द्र खुल जाएगा।

↑ अलवर में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित जनता राजयोग फ़िल्म देख रही है

कोल्हापुर—सेवा केन्द्र से ब्र० कु० सुनंदा लिखती हैं कि ४-१०-८१ से ८-१०-८१ तक शिवशक्तियों की चैतन्य झाँकियाँ सजा कर प्रदर्शन किया गया, जिसका उद्घाटन महिला मंडल की अध्यक्षा, बहिन शकुन्तला पाटिल जी ने किया। योग युक्त मुद्रा में एकाग्रता से बैठी हुई बहिनों को अनेकों वी० आई० पीज० तथा अन्य हज़ारों आत्माओं ने बड़े आश्चर्यचकित रीति से देखा। इस अनोखे कार्यक्रम से प्रभावित होकर कईयों ने सप्ताह कोर्स करने की इच्छा प्रकट की।

मितई— (बाराबांकी) सेवा केन्द्र की ओर से पेपर मिल कालोनी, लखनऊ केन्द्र की संचालिका ब्र० कु० सुमित्रा के नेतृत्व में बाल-प्रदर्शनी का आयोजन सितम्बर में किया गया, जिसमें बच्चों को आदर्श

बनाने हेतु अनुशासन और अध्यात्म पर विशेष बल दिया गया। इसके अतिरिक्त १६ सितम्बर १९८१ को एक जुलूस का भी आयोजन किया गया जिसमें लगभग डेढ़ हज़ार लोगों ने भाग लिया।

पुरी—सेवाकेन्द्र से ब्र० कु० निरूपमा लिखती हैं कि २०-९-८१ सायं को पद्म भूषण तथा जमनालाल बजाज पुरस्कार विजेता बहिन रामा देवी के स्वागत में एक समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग २५० प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। बहिन रामा देवी ने बताया कि यद्यपि बापू गांधी के अहिंसा के सिद्धांत पर भारत को स्वतंत्रता तो मिली लेकिन वास्तव में हर आत्मा पांच विकारों की परतंत्रता में है, जिसके लिए दुर्गा की मूर्त्ति को पूजने की नहीं अपितु स्वयं दुर्गा बनकर इन विकारों पर जीत पाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त १६ सूत्री कार्यक्रम की भी सराहना की। इस समारोह में समाचार पत्रों के संवाद दाताओं ने भी भाग लिया।

हिंगण घाट—सेवा केन्द्र से ब्र० कु० नंदा लिखती हैं कि वहाँ पर वार्षिक उत्सव बड़े उत्साहपूर्वक तथा धूमधाम से मनाया गया, इस अवसर पर शहर के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। इस उत्सव में विदर्भ-विभाग-संचालिका ब्र० कु० पुष्पारानी जी मुख्य अतिथि थीं।

महाड़ (जि० रायगढ़ महाराष्ट्र) में "विश्व नव निर्माण सम्मेलन" में ब्र० कु० गोदावरी प्रवचन करती हुई। मंच पर भ्राता जादवजी एडवोकेट, लाजु बहन, मोहिनी बहन जी दिखाई दे रही हैं।

काठमांडू ज़िला शिक्षा अधिकारी भ्राता नारायण कृष्ण जोशी जी को ब्र० कु० राज नशीली वस्तुओं को छोड़ने के लिए समझा रही हैं। साथ में शीला, अरुणा, तथा सीतु दादी जी खड़ी हैं।

हिसार में चरित्र निर्माण सम्मेलन तथा प्रदर्शनी

हिसार में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक सम्मेलन, हिसार में ३ एवं ४ अक्टूबर को एक विशाल सम्मेलन का आयोजन किया गया। लगभग एक हज़ार आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अन्तर्गत चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी भी रखी गई जिसका उद्घाटन वहाँ के डिप्टी कमिश्नर ने किया। राजयोग शिविरों में ८० आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके इलावा शिक्षाविद् सम्मेलन, चिकित्सक सम्मेलन भी किए गए। सिविल हस्पताल, में जेल में, सर्वोदय भवन में आध्यात्मिक कार्यक्रम किए गए जिससे शहर में आध्यात्मिकता की लहर फैल गई। ३ अक्टूबर को एक पत्रकार सम्मेलन किया गया जिसमें १० पत्रकारों ने भाग लिया।

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एवं प्रकाशक, 151 ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D N) 178

मुलन्द-थाना (बम्बई) की ओर से आयोजित 'वक्तृत्व, स्पर्धा' में प्रथम आने वाले विद्यार्थी को भ्राता एस० एन० मानुधने जिला सैशन जज, थाना पुरस्कार देते हुए

ब्र० कु० लक्ष्मी तथा ब्र० कु० शान्ता कोलोम्बो में भ्राता आनन्दा टिसा डे० एलविज, श्री लंका के राज्य मंत्री को शिव बाबा का चित्र भेंट करते हुए।

ब्र० कु० पूनम जयपुर में भ्राता शिव चरण माथुर, मुख्यमंत्री राजस्थान को चित्रों की व्याख्या देते हुए

मोरार जी देसाई पाण्डव भवन, आबू पर्वत पर ब्रह्मा बाबा की झोंपड़ी के समीप गुलाब की कलम लगाते हुए

जीन्द सेवा केन्द्र पर हरियाणा के स्वशासन मंत्री भ्राता मांगे राम गुप्ता जी पधारे, चित्र में शहर के प्रमुख व्यक्ति तथा ब्र० कु० भाई बहन उनके साथ दिखाई दे रहे हैं।

Regd.No.D(D) 178

कुल्लू में दशहरे मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री भ्राता वसन्त साठे ने किया। उनके साथ डी० सी०, डी० ए० एफ० ओ० तथा ब्र० कु० भाई बहन खड़े हैं।

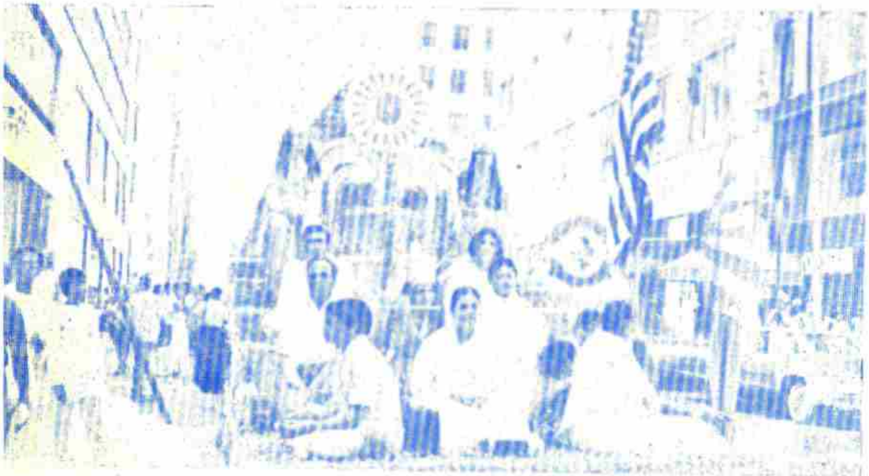

न्यूयार्क में 'इण्डिया ड' परेड के अवसर पर "भारत का प्राचीन राजयोग" पर झांकी का दृश्य

सेवा समाचार चित्रों में

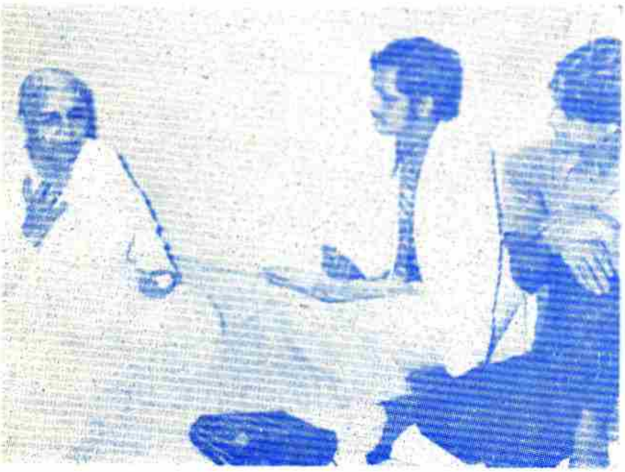

असम के सुप्रसिद्ध गायक कलाकार भ्राता ए० हजारिका, तथा पत्रकार शम्भू प्रसाद शर्मा, ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी से भेंट करते हुए

ब्र० कु० सुदेश हंसलों के मेयर तथा उनकी लड़की को सृष्टि चक्र की व्याख्या करते हुए। ब्र० कु० रेखा तथा शशी साथ में हैं